णमोयार-महप्पुरो

(णमोकार माहात्म्य)

आचार्य वसुनन्दी मुनि

ग्रंथ	:	णमोयार-महप्पुरो (णमोकार माहात्म्य)
मंगल आशीर्वाद	:	परम पूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानन्द जी मुनिराज
ग्रंथकार	:	अभीक्षण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
संपादन	:	आर्यिका वर्धस्वनंदनी
प्राप्ति स्थान	:	• श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली, बोलखेड़ा (कामां) राजस्थान
संस्करण	:	द्वितीय 1000 (सन् 2021)
प्रकाशक	:	निर्ग्रंथ ग्रंथमाला समिति (पंजी.)
मुद्रक	:	पारस प्रकाशन, दिल्ली मो.: 9811374961, 9818394651, 9811363613 pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

संपादकीय

ज्ञानाद्वितं वेत्ति ततः प्रवृत्तिं, रत्नत्रये संचित कर्म मोक्षः।
ततस्ततः सौख्यमबाध मुच्चैस्तेनात्रयत्नं विदधाति दक्षः॥

मनुष्य ज्ञान से हित को जानता है, हित का ज्ञान होने से रत्नत्रय में प्रवृत्ति करता है, रत्नत्रय में प्रवृत्ति करने से संचित कर्मों से मोक्ष होता है और संचित कर्मों के मोक्ष से निर्बाध उत्तम सुख की प्राप्ति होती है, इसलिये चतुर मनुष्य ज्ञान में प्रयत्न करते हैं।

भव्य-नराः ज्ञानरथाधिरूढाः, व्रजन्ति शीघ्रं शिवपत्तनञ्च।
अज्ञानिनो मौढ्यरथाधिरूढाः, व्रजन्ति श्वभ्राभिधपत्तनं वै॥

ज्ञान रूपी रथ पर सवार हुए भव्य जीव शीघ्र मोक्षरूपी नगर को प्राप्त होते हैं और मूर्खतारूपी रथ पर सवार हुए अज्ञानी जीव निश्चय से नरकरूपी नगर को प्राप्त होते हैं।

चेतना के क्षितिज पर उदीयमान सम्यग्ज्ञान का आदित्य अज्ञान रूपी तम को तिरोहित कर वस्तु का सम्यक् अवबोध कराने में समर्थ होता है और सम्यग्ज्ञान का यह मिहिर श्रुताभ्यास स्वाध्याय से तेजस्विता को प्राप्त होता है। "सम्यग्ज्ञान का वह सूर्य कषायों का अवशोषण, भोग रूपी कीटाणुओं का नाश, सम्यगावबोध का प्रकाश फैलाता है।" स्वाध्याय में निरत व्यक्ति के लिये मोक्ष रूपी दुर्ग तक पहुँचने में बाधक संसार का यह दुर्गम व दुर्लंघ्य सा प्रतीत होने वाला गिरी राईवत् हो जाता है जिससे मोक्ष यात्रा सरल व सुगम हो जाती है।

अतः भव्य जीवों के हितार्थ आचार्य श्री ने मूलभाषा प्राकृत में ग्रंथों का लेखन किया, जिससे भाषा को जीवंतता भी प्राप्त हो और सद्साहित्य के आलोक से संपूर्ण विश्व प्रकाशित हो सके।

णमोकार मंत्र वह अनादिनिधन मंत्र है जिसमें व्यक्ति विशेष को नहीं बल्कि गुणों से परिपूरित परम पद में स्थित सदा वंदनीय

परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है। इसके माहात्म्य से कितने ही जीवों ने भौतिक व पारमार्थिक सुखों को प्राप्त किया है। आचार्य महाराज ने 159 गाथाओं में णमोकार महामंत्र के माहात्म्य व प्रभाव को निबद्ध किया है। जाप विधि आदि के साथ णमोकार महामंत्र में प्रयुक्त प्रत्येक अक्षर के प्रभावादि का भी वर्णन किया है। णमोकार के लगभग शत नाम व उनकी सार्थकता जो आचार्य महाराज ने इस ग्रंथ में दर्शायी है वह अद्भुत है। ग्रंथ पढ़कर नि:संदेह इसके प्रति श्रद्धा और अधिक प्रगाढ़ होगी और कदाचित् मिथ्यात्व की ओर अग्रसर हो रहे कदमों में भी ठहराव होगा। क्योंकि कार्य की सिद्धि आज शक्तिहीन मानव की विवशता है। यदि उसी के लिये समीचीन उपायादि प्राप्त हों तब मिथ्यात्व की दलदल में फँसने से वह बच सकता है। पचासों उदाहरण ग्रंथकार ने ग्रंथ में प्रस्तुत किये जिनमें मनुष्य-तिर्यंचादि ने इस मंत्र के माध्यम से शुभ व उच्च पद को प्राप्त किया। यह सर्व मनोरथों की पूर्ति करने वाला व कर्म नाश करने में भी समर्थ है यद्यपि यह मंत्र कामनादि से स्वतंत्र है किन्तु फिर भी जल पीने वाले को शीतलता का मिलना स्वाभाविक ही है।

पत्तेय-दुह-णासगो, सव्व-मणोरह-पूरगो मंतो हु।
अपुव्व-मित्तं एसो, सामी सेवगो सहयरो य॥198॥

यह मंत्र निश्चय से प्रत्येक दु:ख का नाशक, सर्व मनोरथ पूरक, अपूर्वमित्र, स्वामी, सेवक और सहचर भी है।

कम्म-णासिदुं सक्को, परमेट्ठि-णमोक्कार-जुदो मंतो।
तस्स चिंतणं झाणं, इट्ठ-सिवपद-देदुं सक्को॥151॥

जो मंत्र कर्म का नाश करने में समर्थ है, परमेष्ठियों के नमस्कार से युक्त है उसका चिंतन व ध्यान इष्ट शिवपद को देने में समर्थ है।

णमोकार माहात्म्य नामक यह ग्रंथ निश्चित ही पठनीय व श्लाघनीय है।

यदि इस ग्रंथ के संपादन में कोई त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन

संशोधित कर पढ़ें, हंसवत् गुणग्राही दृष्टि से ग्रंथाध्ययन करें। जन-जन के श्रद्धापुंज परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज का संयम, तप, ज्ञान, साधना का सौरभ सहस्रों वर्षों तक संपूर्ण विश्व को सुरभित करता रहे। गुरुवर श्री को आरोग्य लाभ हो एवं अपने लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त करें। परम पूज्य गुरुवर श्री के चरणों में सिद्ध-श्रुत-आचार्य भक्ति सहित कोटिशः नमोस्तु! नमोस्तु! नमोस्तु!.....।।

''जैनम् जयतु शासनम्''

श्री शुभमिति माघ शुक्ल दशमी
श्री वीर निर्वाण संवत् 2547
सोमवार 22.2.2021
श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली-बौलखेड़ा,
कामां, भरतपुर (राज.)

आर्यिका वर्धस्वनंदनी

अनुक्रमणिका

मंगलाचरण 11
परमेष्ठी स्वरूप 11
परमात्मा 12
अंतरात्मा 12
मंत्र स्वरूप 12
अक्षर संख्या 13
स्वप्रकृत्यानुसार फल 13
णमोकार संज्ञक 14
गुणों को नमस्कार 14
सर्वाराधनीय 14
हितकारक 15
भाषा व छंद 15
अपराजित मंत्र 15
मूलमंत्र 16
पापारि-मंत्र 16
बीज मंत्र 16
अनादिनिधन मंत्र 17
विघ्नहरण मंत्र 17
मंगलकारी मंत्र 17
पंचगुरु मंत्र 18
आत्मजेत्ता मंत्र 18
केवलज्ञानमंत्र 18
कर्म निर्मूल मंत्र 19
महामंत्र 19
कालजय-कारक 19
ब्रह्मवाचक मंत्र 20
विष्णु संज्ञक 20
समता मंत्र 20
शंकरवाची 21
कषायरिपु मंत्र 21
रत्नत्रय संज्ञक 21
महामृत्युंजय 22
चक्रवर्ती सम मंत्र 22
चिंतामणि सम मंत्र 22
स्वर्ग सोपान मंत्र 23
पूर्ण मंत्र 23
जीवंत मंत्र 23
शाश्वत मंत्र 24
मंत्रराज 24
आदि मंगल 25
संकटमोचन मंत्र 25
मंत्र एक नाम अनेक 25
महामंत्रस्थ अक्षर फल 29
वर्ण-परमेष्ठी के प्रतीक 35
वर्ण प्रभाव 35
जाप भेद 36
जाप विधि 37
शुद्धि भेद 37
शुद्धि आवश्यक 37
त्रियोग शुद्धि से जप 38

मंत्र पठन क्रम 38
कितने प्रकार से पठन? 39
जप संख्या 39
शुक्र, चंद्र, राहु ग्रह शांति हेतु जप . 39
सूर्य, मंगल, केतु ग्रह शांति हेतु जप 40
गुरुग्रह शांति हेतु जप 40
बुध ग्रह शांति हेतु जप 40
शनि ग्रह शांति हेतु जप 41
मंत्र पठन 41
पुण्यकारक 42
मंत्र जप कहाँ? 42
मंत्र माहात्म्य 42
शिव बीज 43
सर्वसौख्यकारक 43
रत्नत्रय प्राप्ति 43
भवतारक 44
स्वभाव कारक 44
विशुद्ध ऊर्जाकारक मंत्र 44
गुणोत्पादक 45
णमोकार का अचिंत्य प्रभाव 45
त्रिलोकपति कौन? 47
कुप्रभाव नाशक 48
प्रणव बीज 48
मंत्र ध्यान फल 49
अपमान से नरक 49
मंत्रजप फल को प्राप्त जीव 50
फल प्राप्त करने वाले तिर्यंच 51
दोष नाशक 52
भूतादि निवारक 53
तंत्रविद्या हारक 53
ग्रहकष्ट नाशक 53
नरपशुकृत पीड़ानाशक 54
रोग नाशक 54
मनोरथ-पूरक 55
पद दायक 55
निर्वाण हेतु 55
कर्म विध्वंसक 56
मंत्र सामर्थ्य 56
शिव दायक मंत्र 56
अंतिम मंगलाचरण 57
प्रशस्ति 58

णमोयार-महप्पुरो

(णमोक्कार माहात्म्य)

द्वादशांग के साररूप जिस मंत्र का एक बार भी स्मरण जीव को शुभायु, शुभगति की ओर प्रेरित कर देता है। जिसमें विश्व की समस्त शक्तियों का निवास है, जो असाध्य को साध्य करने की सामर्थ्य से युक्त है। उस महामंत्र की शक्ति, प्रभाव व मंत्र के माहात्म्य आदि को दर्शाने वाला यह ग्रंथ अनुपमेय है।

णमोयार-महप्पुरो
(णमोकार माहात्म्य)

मंगलाचरण

वंदित्तु सव्व-सिद्धे, अरिहंते सूरि-पाठगे साहू।
णमोयार-महप्पुरं, कम्मक्खयिदुं वोच्छामि हं।।1।।

अन्वयार्थ—सव्व-सिद्धे-सभी सिद्धों **अरिहंते**-अरिहंतों **सूरि-पाठगे**-आचार्य, उपाध्याय **साहू**-साधुओं को **वंदित्तु**-वंदन कर **हं**-मैं (आचार्य वसुनंदी मुनि) **कम्मक्खयिदुं**-कर्म क्षय के लिए **णमोयार-महप्पुरं**-णमोकार माहात्म्य को **वोच्छामि**-कहता हूँ।

मंतो मंगल-हेदू, भव्वाणं दुक्ख-णासगो णिच्चं।
णिव्वाण-सुह-कारणं, णमो अणाइ-णिहण-मंतस्स।।2।।

अन्वयार्थ—मंतो-मंत्र **मंगल-हेदू**-मंगल का हेतु है **णिच्चं**-नित्य **भव्वाणं**-भव्यों के **दुक्ख-णासगो**-दु:खों का विनाश करने वाला है (और) **णिव्वाण-सुह-कारणं**-निर्वाण सुख का कारण है (ऐसे) **अणाइ-णिहण-मंतस्स**-अनादिनिधन मंत्र को **णमो**-नमस्कार हो।

परमेष्ठी स्वरूप

इट्ठपदे लीणा जे, भणिदा खलु इट्ठरूवा भव्वाण।
वीदरागदा-जुत्ता, लोयपुज्जा परमेट्ठी ते।।3।।

अन्वयार्थ—जे-जो **इट्ठ-पदे**-इष्ट पद में **लीणा**-लीन हैं **भव्वाण**-भव्यों के लिए **इट्ठ-रूवा**-इष्ट रूप हैं **वीदरागदा-जुत्ता**-वीतरागता से युक्त हैं **लोयपुज्जा**-लोक में पूज्य हैं **ते**-वे **खलु**-निश्चय से **परमेट्ठी**-परमेष्ठी **भणिदा**-कहे जाते हैं।

परमात्मा

सव्वुच्च-परमपदस्स, कारणं परमेट्ठी मुणेदव्वो।
परमप्पा दुविहो खलु, सकल-णिकलारिह-सिद्धा वा।।4।।

अन्वयार्थ—परमेट्ठी-परमेष्ठी **खलु**-निश्चय से **सव्वुच्च-परमपदस्स**-सर्वोच्च परम पद के **कारणं**-कारण **मुणेदव्वो**-जानने चाहिए **परमप्पा**-परमात्मा **दुविहो**-दो प्रकार के हैं **सकल-णिकला**-सकल परमात्मा व निकल परमात्मा **वा**-अथवा **अरिह-सिद्धा**-अरिहंत व सिद्ध।

अंतरात्मा

सेसा हु अंतरप्पा, आइरियो उवज्झायो साहू य।
ते वि मोक्खस्स हेदू, सद्धाइ अभिणंदेज्ज सया।।5।।

अन्वयार्थ—सेसा-शेष **अंतरप्पा**-अंतरात्मा हैं **आइरियो**-आचार्य **उवज्झायो**-उपाध्याय **य**-और **साहू**-साधु। **हु**-निश्चय से **ते**-वे **वि**-भी **मोक्खस्स**-मोक्ष के **हेदू**-हेतु हैं अतः **सद्धाए**-श्रद्धा से **सया**-सदा उनकी **अभिणंदेज्ज**-स्तुति करनी चाहिए।

मंत्र स्वरूप

मणस्स रक्खगो तहा, थिरचित्तस्स कारणं णियमेणं।
कम्मक्खय-हेदू जो, भणिदो सो आगमे मंतो।।6।।

अन्वयार्थ—जो-जो **मणस्स**-मन का **रक्खगो**-रक्षक है **णियमेणं**-नियम से **थिरचित्तस्स**-स्थिर चित्त का **कारणं**-कारण है **तहा**-तथा **कम्मक्खय-हेदू**-कर्म क्षय का हेतु है **सो**-वह **आगमे**-आगम में **मंतो**-मंत्र **भणिदो**-कहा गया है।

बीयक्खराण पुंजो, णिच्चं णासगो पाव-पयडीणं।
चित्ताणंद-कारणं, अप्पजोदि-सरूवो मंतो।।7।।

अन्वयार्थ—मंतो-मंत्र **बीयक्खराण**-बीजाक्षरों का **पुंजो**-पुंज **णिच्चं**-नित्य **पाव-पयडीणं**-पाप प्रकृतियों का **णासगो**-नाशक **चित्ताणंद-कारणं**-चित्त के आनंद का कारण और **अप्प-जोदि-सरूवो**-आत्म ज्योति स्वरूप है।

अक्षर संख्या

परमेट्ठि-वायगेसो, पणतीसक्खर-मूलबीयजुत्तो।
विणा बीयक्खरेणं, ण संभवो मंत-णिम्माणं।।8।।

अन्वयार्थ—एसो-यह **परमेट्ठि-वायगो**-परमेष्ठी वाचक मंत्र **पणतीसक्खर-मूलबीयजुत्तो**-35 अक्षर व मूल बीज युक्त है **बीयक्खरेणं**-बीजाक्षर के **विणा**-बिना **मंत-णिम्माणं**-मंत्र का निर्माण **संभवो**-संभव **ण**-नहीं है।

स्वप्रकृत्यानुसार फल

पुढविजलग्गि-वाउ-णह-तच्चजुत्ता बीयक्खरा होज्जा।
जहा जस्स पइडी सो, अक्खरो देदि तहेव फलं।।9।।

अन्वयार्थ—बीयक्खरा-बीजाक्षर **पुढविजलग्गि-वाउ-णह-तच्चजुत्ता**-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश तत्त्व से युक्त **होज्जा**-होते हैं **जहा**-जैसी **जस्स**-जिसकी **पइडी**-प्रकृति होती है **सो**-वह **अक्खरो**-अक्षर **तहेव**-उसी प्रकार **फलं**-फल **देदि**-देता है।

णमोकार संज्ञक

णमंति जेण मंतेण, णमो-सद्देणं होज्ज आरंभो।
णमणं सिक्खावदे हु, सस्सदा णमोयार-सण्णा।।10।।

अन्वयार्थ—जेण-जिस **मंतेण**-मंत्र के द्वारा **णमंति**-नमस्कार किया जाता है (जो) **णमो-सद्देणं**-'णमो' शब्द से **आरंभो**-आरंभ **होज्ज**-होता है (जो) **णमणं**-नमस्कार करना **सिक्खावदे**-सिखाता है (उसकी) **हु**-निश्चय से **सस्सदा**-शाश्वत **णमोयार-सण्णा**-णमोकार संज्ञा है।

गुणों को नमस्कार

गुणा खलु तेकालिया, ण होज्ज तिकालियो वि मणुजो।
तम्हा को वि माणवो, ण णमिदो णमोयार-मंते।।11।।

अन्वयार्थ—गुणा-गुण **खलु**-निश्चय से **तेकालिया**-त्रैकालिक हैं व **को वि**-कोई भी **मणुजो**-मनुष्य **तिकालियो**-त्रैकालिक **ण**-नहीं **होज्ज**-होता **तम्हा**-इसीलिए **णमोयार-मंते**-णमोकार मंत्र में **को वि**-कोई भी **माणवो**-मानव को **णमिदो ण**-नमस्कार नहीं किया गया।

सर्वाराधनीय

कुणदि सव्व-कल्लाणं, णो मेत्तं जइणाण णमोयारो।
जो तं झायदि समरदि, कम्मक्खयिदुं समत्थो सो।।12।।

अन्वयार्थ—णमोयारो-णमोकार मंत्र **मेत्तं**-मात्र **जइणाण**-जैनों का **णो**-नहीं (अपितु) **सव्व-कल्लाणं**-सभी का कल्याण **कुणदि**-करता है **जो**-जो जीव **तं**-उसका **झायदि**-ध्यान करता है **समरदि**-स्मरण करता है **सो**-वह **कम्मक्खयिदुं**-कर्म क्षय करने में **समत्थो**-समर्थ होता है।

हितकारक

जह णीरं गो रुक्खो, होज्ज णहं पुढवी वाऊ अग्गी।
सव्वाणं हिद-हेदू, णमोयारो तहेव जाणह।।13।।

अन्वयार्थ—जह-जिस प्रकार **णीरं**-नीर **गो**-गाय **रुक्खो**-वृक्ष **णहं**-आकाश **पुढवी**-पृथ्वी **वाऊ**-वायु **अग्गी**-अग्नि **सव्वाणं**-सभी के **हिद-हेदू**-हित का कारण **होज्ज**-होते हैं **तहेव**-उसी प्रकार **णमोयारो**-णमोकार मंत्र **जाणह**-जानो।

भाषा व छंद

पागद-भासाए सो, विरइदो तहा दु अज्जा-छंदम्मि।
णमोयारो-सुमंतो, जो परमपियो अवि सव्वाण।।14।।

अन्वयार्थ—सो-वह **णमोयारो**-णमोकार **सुमंतो**-सुमंत्र **पागद-भासाए**-प्राकृत भाषा में **तहा**-तथा **अज्जा-छंदम्मि** आर्या छंद में **विरइदो**-लिखा गया है **जो**-जो (छंद) **सव्वाण**-सभी का **परमपियो**-परम प्रिय **अवि**-भी है।

अपराजित मंत्र

अवराजिद-मंतेसो, होदि ण कया वि पराजिदो लोगे।
धरदे णिय-चित्ते जो, मंतं परमपदं लहदि सो।।15।।

अन्वयार्थ—एसो-यह **अवराजिद-मंतो**-अपराजित मंत्र **लोगे**-लोक में **कया वि**-कभी भी **पराजिदो**-पराजित **ण**-नहीं **होदि**-होते **जो**-जो **मंतं**-मंत्र को **णियचित्ते**-निज चित्त में **धरदे**-धारण करता है **सो**-वह **परमपदं**-परमपद **लहदि**-प्राप्त करता है।

मूलमंत्र

सव्व-मंताण मूलो, भणिदो मूलमंतो णमोयारो।
मूलं विणा ण रुक्खो, जह मंतेसो तह णेयो।।16।।

अन्वयार्थ—सव्व-मंताण-सभी मंत्रों का **मूलो**-मूल या आधार **णमोयारो**-णमोकार मंत्र है (इसीलिए इसे) **मूलमंतो**-मूलमंत्र **भणिदो**-कहा जाता है **जह**-जैसे **मूलं**-मूल के **विणा**-बिना **रुक्खो**-वृक्ष **ण**-नहीं होता **तह**-उसी प्रकार **एसो**-यह **मंतो**-मंत्र **णेयो**-जानना चाहिए।

पापारि-मंत्र

सम्मत्त-अरी मोहो, मोहस्स महामंत-णमोयारो।
सव्वपावारि-मंतो, पावारि-मंतं णमंसामि।।17।।

अन्वयार्थ—सम्मत्त-अरी-सम्यक्त्व का शत्रु **मोहो**-मोह है **मोहस्स**-मोह का शत्रु **महामंत-णमोयारो**-णमोकार महामंत्र है **सव्व-पावारि-मंतो**-सभी पापों का शत्रु णमोकार मंत्र है ऐसे **पावारि-मंतं**-पाप-अरि मंत्र को **णमंसामि**-नमस्कार करता हूँ।

बीज मंत्र

बीअं विणा ण रुक्खो, महामंतं विणा ण अण्ण-मंता।
बीअं सव्व-मंताण, भणिदो बीयमंतो जिणेण।।18।।

अन्वयार्थ—जिस प्रकार **बीअं**-बीज के **विणा**-बिना **रुक्खो**-वृक्ष **ण**-नहीं होता (उसी प्रकार) **महामंतं**-महामंत्र के **विणा**-बिना **अण्ण-मंता**-अन्य मंत्र **ण**-नहीं होते। (यह णमोकार मंत्र) **सव्व-मंताण**-सभी मंत्रों का **बीअं**-बीज है (अत:) **जिणेण**-जिनेन्द्र भगवान् के द्वारा **बीयमंतो**-बीज मंत्र **भणिदो**-कहा गया है।

अनादिनिधन मंत्र

ण होदि कयावि अंतो, महामंतस्स कयावि णारंभो।
मंतो अणाइ-णिहणो, भासिदो जिणागमे तम्हा।।19।।

अन्वयार्थ—महामंतस्स-महामंत्र का **कया वि**-कभी भी **अंतो**-अंत **ण**-नहीं **होदि**-होता और **कया वि**-कभी भी **आरंभो**-प्रारंभ **ण**-नहीं होता **तम्हा**-इसीलिए **जिणागमे**-जिनागम में (इसे) **अणाइ-णिहणो**-अनादिनिधन **मंतो**-मंत्र **भासिदो**-कहा गया है।

विघ्नहरण मंत्र

विग्घहरण-मंतेसो, सव्व-विग्घाण विणासगो णिच्चं।
तम्हा भव्व-जीवेहि, सव्वदा उवासणीयो खलु।।20।।

अन्वयार्थ—खलु-निश्चय से **एसो**-यह **विग्घ-हरण-मंतो**-विघ्न हरण मंत्र **णिच्चं**-नित्य **सव्व-विग्घाण**-सभी विघ्नों का **विणासगो**-विनाश करने वाला है **तम्हा**-इसीलिए **भव्व-जीवेहि**-भव्य जीवों के द्वारा (यह मंत्र) **सव्वदा**-सर्वदा **उवासणीयो**-उपासनीय है।

मंगलकारी मंत्र

पावाणि गालदे जो, भणिदं सया सुहकारणं मंगं।
मंगलो इमो मंतो, तियलोयस्स सव्व-भव्वाण।।21।।

अन्वयार्थ—मंगं-मंग **सया**-सदा **सुहकारणं**-सुख का कारण **भणिदं**-कहा गया है **तियलोयस्स**-तीन लोक के **सव्व-भव्वाण**-सभी भव्यों के लिए **इमो**-यह **मंतो**-मंत्र **मंगलो**-मंगलकारी है **जो**-जो **पावाणि**-पापों को **गालदे**-गलाता है।

पंचगुरु मंत्र

पणगुरू होंति लोगे, अरिहाइ-सुरपुज्ज-लोयपसिद्धा।
मंतम्मि ते णमिदा हु, तम्हा पंचगुरुमंतेसो।।22।।

अन्वयार्थ—लोगे-लोक में **हु**-निश्चय से **अरिहाइ-सुरपुज्ज-लोयपसिद्धा**-देवों द्वारा पूज्य, लोक में प्रसिद्ध अरिहंत आदि **पणगुरु**-पाँच गुरु **होंति**-होते हैं **मंतम्मि**-मंत्र में **ते**-उन्हें **णमिदा**-नमस्कार किया गया है **तम्हा**-इसीलिए **एसो**-यह **पंचगुरुमंतो**-पंच गुरु मंत्र (कहा जाता है)।

आत्मजेत्ता मंत्र

महादुल्लहो लोगे, अप्पजयो मंतो अप्पजइत्तो।
अप्पं जयिदुं णिच्चं, सक्को तं जवेज्ज भावेहि।।23।।

अन्वयार्थ—लोगे-लोक में **अप्पजयो**-आत्मजय **महादुल्लहो**-महा दुर्लभ है **अप्पजइत्तो**-आत्मजेत्ता **मंतो**-मंत्र **णिच्चं**-नित्य **अप्पं**-आत्मा को **जयिदुं**-जीतने में **सक्को**-समर्थ है (अतः) **तं**-इसे **भावेहि**-भावों से **जवेज्ज**-जीतना चाहिए।

केवलज्ञानमंत्र

केवलणाण-कारणं, अणंत-दंसण-सुह-सत्ति-हेदू य।
केवलणाण-मंतिणं, णमोयार-लोगप्पसिद्धो।।24।।

अन्वयार्थ—णमोयार-लोगप्पसिद्धो-णमोकार मंत्र लोक में प्रसिद्ध है **केवलणाण-कारणं**-केवलज्ञान का कारण है **अणंत-दंसण-सुह-सत्ति-हेदू य**-अनंत दर्शन, सुख व शक्ति का हेतु है अतः **इणं**-यह **केवलणाण-मंतो**-केवलज्ञान मंत्र कहा जाता है।

कर्म निर्मूल मंत्र

कम्मणिम्मूल-मंतो, भणिदो पंचपरमेट्ठि-वाचगो हु।
अडयाल-सदं पयडी, कम्माण खयंति मंतेणं।।25।।

अन्वयार्थ—हु-निश्चय से **मंतेणं**-णमोकार मंत्र से **कम्माण**-कर्मों की **अडयाल-सदं**-एक सौ अड़तालीस **पयडी**-प्रकृतियाँ **खयंति**-नष्ट हो जाती हैं **पंचपरमेट्ठि-वाचगो**-यह पंच परमेष्ठी का वाचक मंत्र **कम्मणिम्मूल-मंतो**-कर्म निर्मूल मंत्र **भणिदो**-कहा गया है।

महामंत्र

लोयस्स सव्व-सत्ती, सव्वुवगारि-णमोक्कार-मंतम्मि।
विज्जंति तं पसिद्धो, इणं वि महामंत-णामेण।।26।।

अन्वयार्थ—सव्वुवगारि-णमोक्कार-मंतम्मि-सर्व उपकारी नमस्कार मंत्र में **लोयस्स**-लोक की **सव्व-सत्ती**-सर्व शक्तियाँ **विज्जंति**-विद्यमान हैं **तं**-इसीलिए **इणं**-यह **महामंत-णामेण**-महामंत्र नाम से **वि**-भी **पसिद्धो**-प्रसिद्ध है।

कालजय-कारक

कालजयी जे होही, मंत-महप्पुरो अयं विआणेज्ज।
कालजयिं होदुं णो, सक्को विणा महामंतेण।।27।।

अन्वयार्थ—जे-जो पुरुष **कालजयी**-कालजयी **होही**-हुए हैं **अयं**-यह **मंत-महप्पुरो**-मंत्र का माहात्म्य ही **विआणेज्ज**-जानना चाहिए **महामंतेण**-महामंत्र के **विणा**-बिना (कोई भी) **कालजयिं**-कालजयी **होदुं**-होने में **सक्को**-समर्थ **णो**-नहीं है।

ब्रह्मवाचक मंत्र

बंभवाचगो मंतो, पगड-कारणं सुद्ध-बंभस्स सय।
मंत-जावेण पावदि, अप्पा हु विसुद्ध-पज्जायं।।28।।

अन्वयार्थ—हु-निश्चय से (यह) **बंभवाचगो**-ब्रह्म वाचक **मंतो**-मंत्र **सुद्ध-बंभस्स**-शुद्ध ब्रह्म के **पगड-कारणं**-प्रकट होने का कारण है **मंत-जावेण**-इस महामंत्र के जाप से **अप्पा**-आत्मा **सय**-सदा **विसुद्ध-पज्जायं**-विशुद्ध पर्याय को **पावदि**-प्राप्त करती है।

विष्णु संज्ञक

रक्खगो होदि विण्हू, वेदाणुयायी मण्णंते सया।
महा-रक्खगो मंतो, विण्हू णामं तं मंतस्स।।29।।

अन्वयार्थ—विण्हू-विष्णु **सया**-सदा **रक्खगो**-रक्षक **होदि**-होता है (ऐसा) **वेदाणुयायी**-वेदानुयायी **मण्णते**-मानते हैं यह **महारक्खगो**-महारक्षक **मंतो**-मंत्र है **तं**-इसीलिए (इस) **मंतस्स**-मंत्र का **विण्हू**-विष्णु **णामं**-नाम है।

समता मंत्र

समभावुप्पादगो हु, विक्खादो महामंतो अप्पम्मि।
तम्हा समदा मंतो, भासिदो सण्णाण-पाणोव्व।।30।।

अन्वयार्थ—हु-निश्चय से **अप्पम्मि**-आत्मा में **समभावुप्पादगो**-समभाव का उत्पादक यह **महामंतो**-महामंत्र **विक्खादो**-विख्यात है **तम्हा**-इसीलिए **समदा-मंतो**-यह समता मंत्र **सण्णाण-पाणोव्व**-सम्यग्ज्ञान के प्राण के समान **भासिदो**-कहा गया है।

शंकरवाची

भव-भमणस्स कारणं, सव्वदा दव्व-भाव-णोकम्माणि।
ताणं घादग-मंतो, संकरो जवदु सया भव्वो।।31।।

अन्वयार्थ—दव्व-भाव-णोकम्माणि-द्रव्य, भाव व नोकर्म **सव्वदा**-सर्वदा **भवभमणस्स**-भव भ्रमण का **कारणं**-कारण है **ताणं**-उनका **घादगो**-घात करने वाला **संकरो**-यह शंकर **मंतो**-मंत्र **भव्वो**-भव्य **सया**-सदा **जवदु**-जपें।

कषायरिपु मंत्र

कसाय-घादग-मंतो, पसमभावप्पदायगो जीवाण।
तम्हा पसमो मंतो, कसायरिऊ अवि णादव्वो।।32।।

अन्वयार्थ—कसाय-घादग-मंतो-यह कषायों का घात करने वाला मंत्र **जीवाण**-जीवों के लिए **पसमभावप्पदायगो**-प्रशम भाव को प्रदान करने वाला है **तम्हा**-इसीलिए (यह) **पसमो**-प्रशम **मंतो**-मंत्र है (इसे) **कसायरिऊ**-कषाय रिपु मंत्र **अवि**-भी **णादव्वो**-जानना चाहिए।

रत्नत्रय संज्ञक

रयणत्तयस्स हेदू, अरिह-सिद्ध-सूरि-पाठगा साहू।
रयणत्तय-सण्णा तं, गुणिज्जंति ते मंतजवेण।।33।।

अन्वयार्थ—अरिह-सिद्ध-सूरि-पाठगा-अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय **साहू**-साधु **रयणत्तयस्स**-रत्नत्रय के **हेदू**-हेतु हैं **ते**-वे **मंतजवेण**-मंत्र जाप के द्वारा **गुणिज्जंति**-स्मरण किये जाते हैं **तं**-इसीलिए (उसकी) **रयणत्तय-सण्णा**-रत्नत्रय संज्ञा है।

महामृत्युंजय

महामिच्चुंजयेसो, जम्म-जरा-मरण-णासगो णिच्चं।
देदि णिव्वाणपदं वि, जवंतु हु तम्हा भव्वुल्ला।।34।।

अन्वयार्थ—एसो-यह **महामिच्चुंजयो**-महामृत्युंजय मंत्र **णिच्चं**-नित्य **जम्म-जरा-मरण-णासगो**-जन्म, जरा, मरण का नाश करने वाला है **हु**-निश्चय से (यह) **णिव्वाणपदं**-निर्वाण पद **वि**-भी **देदि**-देता है **तम्हा**-इसीलिए **भव्वुल्ला**-भव्य **जवंतु**-णमोकार मंत्र की जाप करें।

चक्रवर्ती सम मंत्र

जह रायेसुं चक्की, णमोयार-मंतो तह मंतेसुं।
चक्कीव णमोयारो, चउरासि-लक्ख-मंतेसु खलु।।35।।

अन्वयार्थ—जह-जिस प्रकार **रायेसुं**-राजाओं में **चक्की**-चक्रवर्ती होता है **तह**-उसी प्रकार **मंतेसुं**-मंत्रों में **णमोयार-मंतो**-णमोकार मंत्र है **णमोयारो**-णमोकार मंत्र **चउरासि-लक्ख-मंतेसु**-चौरासी लाख मंत्रों में **खलु**-निश्चय से **चक्कीव**-चक्रवर्ती के समान है।

चिंतामणि सम मंत्र

सुरपुज्ज-महामंतं, सारं तिलोगम्मि चिंतामणीव।
सव्वसार-मंतं तं, तिसंझाए चिंतदु भव्वो।।36।।

अन्वयार्थ—सुरपुज्जं-देवों द्वारा पूज्य **तिलोगम्मि**-तीन लोक में **सारं**-सार **चिंतामणीव**-चिंतामणि के समान **तं**-उस **महामंतं**-महामंत्र **सव्वसार-मंतं**-सर्वसार मंत्र का **भव्वो**-भव्य **तिसंझाए**-तीनों संध्याकाल में **चिंतदु**-चिंतन करें।

स्वर्ग सोपान मंत्र

सग्गो सेट्ठो मण्णे, सरीर-सुह-विउलसामग्गी जत्थ।
तस्स कारणं मंतो, तं सग्ग-सोवाण-मंतो वि।।37।।

अन्वयार्थ—सग्गो-स्वर्ग **सेट्ठो**-श्रेष्ठ **मण्णे**-माना जाता है **जत्थ**-जहाँ **सरीर-सुह-विउल-सामग्गी**-शरीर सुख की विपुल सामग्री है (यह) **मंतो**-महामंत्र **तस्स**-उस (स्वर्ग सुख) का **कारणं**-कारण है **तं**-इसीलिए इसे **सग्ग-सोवाण-मंतो**-स्वर्ग-सोपान मंत्र **वि**-भी (जाना जाता है)।

पूर्ण मंत्र

पुण्णा पंचमी तिही, जह पणगुरुवाचगमंतेसो तह।
तम्हा पुण्णो मंतो, सुहदो पुण्णसार भूदो य।।38।।

अन्वयार्थ—जह-जिस प्रकार **पंचमी**-पंचमी **तिही**-तिथि **पुण्णा**-पूर्ण है **तह**-उसी प्रकार **एसो**-यह **पणगुरुवाचग-मंतो**-पंच गुरु वाचक मंत्र है **तम्हा**-इसीलिए **पुण्णसारभूदो**-पूर्ण सारभूत **य**-और **सुहदो**-सुखद (यह) **पुण्णो**-पूर्ण **मंतो**-मंत्र है।

जीवंत मंत्र

जीवंतो परमेट्ठी, पणमिज्जंति मंतेणं सया ते।
अयं जीवंत-मंतो, भणिदो तम्हा गणहरेहिं।।39।।

अन्वयार्थ—परमेट्ठी-परमेष्ठी **जीवंतो**-जीवंत हैं **मंतेणं**-मंत्र के द्वारा **सया**-सदा **ते**-वे (परमेष्ठी) **पणमिज्जंति**-प्रणाम किए जाते हैं **तम्हा**-इसीलिए **गणहरेहिं**-गणधरों के द्वारा **अयं**-यह **जीवंत-मंतो**-जीवंत मंत्र **भणिदो**-कहा गया है।

शाश्वत मंत्र

परमेट्ठी सस्सदो हु, पणमिज्जंति मंतेणं सया ते।
एसो सस्सद-मंतो, भणिदो तम्हा गणहरेहिं।।40।।

अन्वयार्थ—परमेट्ठी-परमेष्ठी **हु**-निश्चय से **सस्सदो**-शाश्वत हैं **मंतेणं**-मंत्र के द्वारा **ते**-वे **सया**-सदा **पणमिज्जंति**-नमस्कार किए जाते हैं **तम्हा**-इसीलिए **गणहरेहिं**-गणधरों के द्वारा **एसो**-यह **सस्सद-मंतो**-शाश्वत मंत्र **भणिदो**-कहा गया है।

जह अग्गीइ उण्हदा, घिदे णिद्धदा य चेदणा जीवे।
सस्सदा णमोयारो, अणादि-णिहण-मंतो तहेव।।41।।

अन्वयार्थ—जह-जिस प्रकार **अग्गीइ**-अग्नि में **उण्हदा**-ऊष्णता **घिदे**-घृत में **णिद्धदा**-स्निग्धता **य**-और **जीवे**-जीव में **चेदणा**-चेतना **सस्सदा**-शाश्वत है **तहेव**-उसी प्रकार **णमोयारो**-णमोकार मंत्र **अणादि-णिहण-मंतो**-अनादिनिधन मंत्र है।

मंत्रराज

जह गिरीसुं सुमेरू , रयणेसु हीरं णरेसु चक्की य।
तह मंतराय-मंतो, पहाणो खलु सव्व-मंतेसु।।42।।

अन्वयार्थ—जह-जिस प्रकार **गिरीसुं**-पर्वतों में **सुमेरू**-सुमेरु **रयणेसु**-रत्नों में **हीरं**-हीरा **य**-और **णरेसु**-नरों में **चक्की**-चक्रवर्ती **पहाणो**-प्रधान है **तह**-उसी प्रकार **खलु**-निश्चय से **सव्व-मंतेसु**-सब मंत्रों में **मंतराय-मंतो**-मंत्रराज मंत्र प्रधान है।

आदि मंगल

लोगिग-लोगोत्तराणि, होज्ज अणेग-मंगलाणि लोगम्मि।
तेसुं आदि-मंगलं, णेयो णमोयार-मंतो हु।।43।।

अन्वयार्थ—लोगम्मि-लोक में **लोगिग-लोगोत्तराणि**-लौकिक व लोकोत्तर **अणेग-मंगलाणि**-अनेक मंगल **होज्ज**-होते हैं **तेसुं**-उनमें **णमोयार-मंतो**-णमोकार मंत्र **हु**-निश्चय से **आदि-मंगलं**-आदि मंगल **णेयो**-जानना चाहिए।

संकटमोचन मंत्र

पावुदयेणं जीवा, णाणा-दुक्खाणि सहंति णियमेण।
दुक्ख-विमुयण-कारणं, संकड-मोअगो खलु मंतो।।44।।

अन्वयार्थ—जीवा-जीव **णियमेण**-नियम से **पावुदयेणं**-पाप के उदय से **णाण-दुक्खाणि**-नाना दु:खों को **सहंति**-सहन करते हैं **दुक्ख-विमुयण-कारणं**-दु:ख के विमोचन का कारण (यह) **मंतो**-मंत्र **खलु**-निश्चय से **संकड-मोअगो**-संकट मोचक है।

मंत्र एक नाम अनेक

महामंतस्स जह सुह-बुह-णामाणि विज्जंति तह लोगे।
जलस्सणेग-णामाणि, सत्ति-पहावादी भिण्णो ण।।45।।

अन्वयार्थ—जह-जिस प्रकार **जलस्स**-जल के **अणेग-णामाणि**-अनेक नाम होते हैं किन्तु **सत्ति-पहावादी**-शक्ति, प्रभाव आदि **भिण्णो**-भिन्न **ण**-नहीं होते **तह**-उसी प्रकार **लोगे**-लोक में **महामंतस्स**-णमोकार महामंत्र के **सुह-बहुणामाणि**-बहुत शुभ नाम **विज्जंति**-विद्यमान हैं।

अणाइ-णिहणो सिवो य, अवराजिदो मूलो महामंतो।
सणादण-सस्सद-णिच्च-मंतो चिंतामणी बीअं।।46।।

अन्वयार्थ—अणाइ-णिहणो-अनादि निधन मंत्र **सिवो**-शिव मंत्र **अवराजिदो**-अपराजित मंत्र **मूलो**-मूल मंत्र **महामंतो**-महामंत्र **सणादण-सस्सद-णिच्च-मंतो**-सनातन, शाश्वत, नित्य मंत्र **चिंतामणी**-चिंतामणि मंत्र **य**-और **बीअं**-बीज मंत्र है।

सव्वसिद्धि-मिच्चुजओ, तारणतरणो पंचणमोक्कारो।
परमेट्ठी चेयण्णं, सव्व-मंगलमओ मंतो य।।47।।

अन्वयार्थ—सव्वसिद्धि-मिच्चुजओ-सर्व सिद्धि, मृत्युंजय **तारणतरणो**-तारण-तरण मंत्र **पंचणमोक्कारो**-पंचनमस्कार मंत्र **परमेट्ठी**-परमेष्ठी मंत्र **चेयण्णं**-चैतन्य मंत्र **य**-और **सव्व-मंगलमओ**-सर्व मंगलमय **मंतो**-मंत्र।

आदी अणंत-मंतो, धम्मपाणो दुहभंजगो अचलो।
पावणासगो सिद्धी, कम्मखवगो सव्वभद्दो य।।48।।

अन्वयार्थ—आदी-आदि मंत्र **अणंत-मंतो**-अनंत मंत्र **धम्मपाणो**-धर्म प्राण मंत्र **दुहभंजगो**-दु:ख भंजक मंत्र **अचलो**-अचल मंत्र **पावणासगो**-पाप नाशक मंत्र **सिद्धी**-सिद्धि मंत्र **कम्मखवगो**-कर्म क्षपक **य**-और **सव्वभद्दो**-सर्वभद्र मंत्र।

खेमंकर-कल्लाणो, सव्व-हिदकरो सुहकरो सुहओ य।
इड्ढि-विणायग-जोगी, जदिपइ-मुणिंद-पणव-मंतो।।49।।

अन्वयार्थ—खेमंकर-कल्लाणो-क्षेमंकर मंत्र, कल्याण मंत्र **सव्व-हिदकरो**-सर्व हितकर **सुहकरो**-सुखकर **सुहओ**-सुभग-मंगलकारी मंत्र **इड्ढि**-रिद्धी **विणायगो**-विनायक **जोगी**-योगी **जदिपइ**-यतिपति **मुणिंदो**-मुनींद्र **य**-और **पणव-मंतो**-प्रणव मंत्र।

सयंभू समवसरणो, अहिंसा सुह-समिद्धि-मंतरायो।
सव्वण्हू परमप्पा, जिणमंतो वीदरायो तह।।50।।

अन्वयार्थ—सयंभू-स्वयंभू **समवसरणो**-समवशरण **अहिंसा**-अहिंसा **सुह-समिद्धी**-सुख-समृद्धि मंत्र **मंतरायो**-मंत्रराज **सव्वण्हू**-सर्वज्ञ **परमप्पा**-परमात्मा **जिणमंतो**-जिन मंत्र **तह**-तथा **वीदरायो**-वीतराग मंत्र।

संवर-णिज्जर-मंतो, सव्वसेट्ठो सिवमग्गो परमो य।
सत्थि-रयणत्तय-सच्च-अजेअ-बंभसरूवो गुणो।।51।।

अन्वयार्थ—संवर-णिज्जर-मंतो-संवर, निर्जरा मंत्र **सव्वसेट्ठो**-सर्वश्रेष्ठ **सिवमग्गो**-शिवमार्ग **परमो**-परम **सत्थि-रयणत्तय-सच्च-अजेओ**-स्वस्ति, रत्नत्रय, सत्य, अजेय **बंभसरूवो**-ब्रह्म स्वरूप **य**-और **गुणो**-गुण मंत्र।

महा-रोय-णिवारगो, णिरापदो अणुभूदी सुद्धप्पो।
अप्प-विसोहग-अग्गी, तित्थयर-परमेसर-मंतो।।52।।

अन्वयार्थ—महा-रोय-णिवारगो-महा रोग निवारक, **णिरापदो**-निरापद **अणुभूदी**-अनुभूति **सुद्धप्पो**-शुद्धात्म **अप्प-विसोहग-अग्गी**-आत्म विशोधक अग्नि **तित्थयरो**-तीर्थंकर व **परमेसर-मंतो**-परमेश्वर मंत्र।

मंतो तिलोग-सारो, सव्वकालिय-भोमियो जगपुज्जो।
उहय-सिद्धो रहस्सो, तह विस्स-दंसणं सत्थगो।।53।।

अन्वयार्थ—तिलोग-सारो-त्रिलोक सार **सव्वकालिय-भोमियो**-सार्वकालिक, सार्वभौमिक **जगपुज्जो**-जगपूज्य **उहय-सिद्धो**-उभय सिद्ध **रहस्सो**-रहस्य **विस्स-दंसणं**-विश्व दर्शन **तह**-तथा **सत्थगो**-सार्थक **मंतो**-मंत्र।

देहातीद-भवंतग-दिव्व-चिदाणंद-गणहर-केवली।
उवमातीद-अग्गिमो, णिम्मलो जिण-केवल-मंतो।।54।।

अन्वयार्थ—देहातीदो-देहातीत **भवंतगो**-भवांतक **दिव्वो**-दिव्य **चिदाणंदो**-चिदानंद **गणहरो**-गणधर **केवली**-केवली **उवमातीदो**-उपमातीत **अग्गिमो**-अग्रिम **णिम्मलो**-निर्मल **जिणो**-जिन और **केवल-मंतो**-केवल मंत्र।

जसकारग-पण्णण्णा, तित्थेसो णाणवड्ढगो लच्छी।
णिव्वाण-अदिसय-जुदो, अक्खय-परमारज्झ-मंतो।।55।।

अन्वयार्थ—जसकारगो-यशकारक **पण्णा**-प्रज्ञा **अण्णा**-आज्ञा **तित्थेसो**-तीर्थेश **णाणवड्ढगो**-ज्ञान वर्द्धक **लच्छी**-लक्ष्मी **णिव्वाण-अदिसय-जुदो**-निर्वाण, अतिशय युक्त **अक्खय-परमारज्झ-मंतो**-अक्षय व परमाराध्य मंत्र।

धम्मो तियालवट्टी, महा-पइडी विगार-सुण्ण-मंतो।
परम-पारिणामियो य, सव्व-वापि-सरस्सदि-झाणं।।56।।

अन्वयार्थ—धम्मो-धर्म **तियालवट्टी**-त्रिकालवर्ती **सव्व-वापी**-सर्वव्यापी **सरस्सदी**-सरस्वती **झाणं**-ध्यान **परम-पारिणामियो**-परम पारिणामिक **महा-पइडी**-महा प्रकृति **य**-व **विगार-सुण्ण-मंतो**-विकार शून्य मंत्र।

अइ-सुहुमो अइ-थूलो, अदिट्ठ-पच्चक्ख-परमसमाही य।
जिणदिट्ठ-परमसमयो, समयसारो सगप्पलद्धी।।57।।

अन्वयार्थ—अइ-सुहुमो-अतिसूक्ष्म **अइथूलो**-अतिस्थूल **अदिट्ठो**-अदृष्ट **पच्चक्ख-परमसमाही**-प्रत्यक्ष, परमसमाधि **जिणदिट्ठो**-जिनदृष्ट **परमसमयो**-परम समय **समयसारो**-समयसार **य**-और **सगप्पलद्धी**-स्वात्म लब्धि मंत्र।

साहणा मुत्तिकंतो, बंध-विमोयग-उपद्दव-णासगो।
विस्स-संति-भग्गेसो, परमट्ठो पुट्ठिमो पूदो।।58।।

अन्वयार्थ—साहणा-साधना **मुत्तिकंतो**-मुक्तिकांत **बंध-विमोयगो**-बंध विमोचक **उपद्दव-णासगो**-उपद्रव नाशक **विस्स-संति**-विश्व शांति **भग्गेसो**-भाग्येश **परमट्ठो**-परमार्थ **पुट्ठिमो**-पुष्टि कारक **पूदो**-पवित्र मंत्र।

सरणो महापबुद्धो, अलोगिगो सव्वुत्तम-रक्खगो य।
इच्चादि-सुह-णामाणि, जो पढदे लहदि सोक्खं सो।।59।।

अन्वयार्थ—सरणो-शरण **महापबुद्धो**-महाप्रबुद्ध **अलोगिगो**-अलौकिक **सव्वुत्तम-रक्खगो य**-सर्वोत्तम और रक्षक मंत्र **इच्चादि-सुह-णामाणि**-इत्यादि शुभ नाम **जो**-जो **पढदे**-पढ़ता है **सो**-वह **सोक्खं**-सुख **लहदि**-प्राप्त करता है।

महामंत्रस्थ अक्षर फल

जे जे अक्खरा णमोयार-मंते ताण फलं विज्जंति।
भणिदं सवर-हिदत्थं, तं विणा सुह-लहिदु-मसक्को।।60।।

अन्वयार्थ—जे-जो **जे**-जो **अक्खरा**-अक्षर **णमोयार-मंते**-णमोकार मंत्र में **विज्जंति**-विद्यमान हैं **ताण**-उनका **फलं**-फल **सवर-हिदत्थं**-स्वपर हित के लिए **भणिदं**-कहा गया है **तं**-उसके **विणा**-बिना (जीव) **सुह-लहिदुं**-सुख प्राप्त करने में **असक्को**-असमर्थ है।

अकार-अव्वय-वावी, अप्प-एगत्त-सूअगो हु सुद्धो।
णाणरूव-सत्तिपुंज-बुद्धो पणव-बीअ-पाणो य।।61।।

अन्वयार्थ—अकारो-अकार **हु**-निश्चय से **अव्वय-वावी**-अव्यय,

व्यापी **अप्प-एगत्त-सूअगो**-आत्मा के एकत्व का सूचक **सुद्धो**-शुद्ध **णाणरूवो**-ज्ञान रूप **सत्तिपुंजो**-शक्ति पुंज **बुद्धो**-बुद्ध **य**-और **पणव-बीअ-पाणो**-प्रणव बीज का प्राण है।

आकारो सत्ति-बुद्धि-वायगो सारस्सद-बीअ-जणगो।
जस-धणासा-पूरगो, माया-बीय-जुदो अव्वयो।।62।।

अन्वयार्थ—आकारो-'आ' कार **सत्ति-बुद्धि-वायगो**-शक्ति व बुद्धि का वाचक **सारस्सद-बीअ-जणगो**-सारस्वत बीज का जनक **माया-बीय-जुदो**-माया बीज से युक्त **जस-धणासा-पूरगो**-यश, धन व आशा का पूरक (और) **अव्वयो**-अव्यय है।

इकार-लच्छिदायगो, मिदु-कज्ज-साहगग्गि-बीय-जणगो।
परुस-कम्म-बाहगो हु, विणयमूलो लज्जाजुदो य।।63।।

अन्वयार्थ—इकारो-'इ' कार **हु**-निश्चय से **लच्छिदायगो**-लक्ष्मी दायक **मिदु-कज्ज-साहगो**-कोमल कार्यों का साधक **अग्गि-बीय-जणगो**-अग्नि बीज का जनक **परुस-कम्म-बाहगो**-कठोर कर्मों का बाधक **विणयमूलो**-विनय मूल **य**-और **लज्जाजुदो**-लज्जा से युक्त है।

उकारो उच्चाडगो, मारगो वि होदि मंति-भावेहिं।
उच्छाह-उक्कित्तुदा-हेदू अचिंत-सत्ति-जुदो य।।64।।

अन्वयार्थ—उकारो-'उ' कार **उच्चाडगो**-उच्चाटक **उच्छाह-उक्कित्तुदा-हेदू**-उत्साह उत्कृष्टता का हेतु **अचिंत-सत्ति-जुदो**-अचिंत्य शक्ति से युक्त **य**-और **मंति-भावेहिं**-मांत्रिक के भावों से **मारगो**-मारक **वि**-भी **होदि**-होता है।

ऊकारो उच्चाडग-मोहग-बीय-मूलो सत्ति-जुदो य।
कज्ज-धंसग-उवद्दव-णासगो कयाइ मारगो वि।।65।।

अन्वयार्थ—ऊकारो-'ऊ' कार **उच्चाडग-मोहग-बीय-मूलो य**-उच्चाटक व मोहक बीजों का मूल **सत्ति-जुदो**-शक्ति युक्त **कज्ज-धंसगो**-कार्य ध्वंसक-**उवद्दव-णासगो**-उपद्रव नाशक और **कयाइ**-कदाचित् **मारगो**-मारक **वि**-भी है।

एकारो णिच्चलो य, पोसगो गदि-सूअग-संवड्ढगो।
अप्प-सत्ति-संचारग-अरिट्ठ-वारग-बीय-मूलो।।66।।

अन्वयार्थ—एकारो-'ए' कार **णिच्चलो**-निश्चल **पोसगो**-पोषक **गदि-सूअगो**-गति सूचक **संवड्ढगो**-संवर्द्धक **अप्प-सत्ति-संचारगो**-आत्म शक्ति का संचारक **य**-और **अरिट्ठ-वारग-बीय-मूलो**-अरिष्ट निवारक बीजों का मूल है।

ओकारो अणुदत्तो, उदत्तो मिदु-रुक्ख-भाव-जुत्तो य।
लच्छि-सिरि-संपोसगो, माया-पणव-णिज्जर-मूलो।।67।।

अन्वयार्थ—ओकारो-'ओ' कार **अणुदत्तो**-अनुदात्त **उदत्तो**-उदात्त **मिदु-रुक्ख-भाव-जुत्तो**-मृदु, रुक्ष भाव से संयुक्त **लच्छि-सिरि-संपोसगो**-लक्ष्मी व श्री का संपोषक **य**-और **माया-पणव-णिज्जर-मूलो**-माया बीज, प्रणव बीज व निर्जरा का मूल है।

जकारो जयकारगो, सत्ति-वड्ढगो णविअ-कज्ज-हेदू।
आहि-वाहि-समणो खलु, आगरिसग-बीय-जणगो तह।।68।।

अन्वयार्थ—जकारो-'ज' कार **खलु**-निश्चय से **जयकारगो**-जय कारक **सत्ति-वड्ढगो**-शक्ति वर्द्धक **णविअ-कज्ज-हेदू**-नवीन कार्य का हेतु **आहि-वाहि-समणो**-आधि-व्याधि का शामक **तह**-तथा **आगरिसग-बीय-जणगो** -आकर्षक बीजों का जनक है।

झकारो कूड-मूलो, आहि-वाहि-णासगो सिरि-कारगो।
सत्ति-संचारगो तह, रेफ -जुदे कज्ज-साहगो वि।।69।।

अन्वयार्थ—झकारो-'झ' कार **कूड-मूलो**-कूट का मूल **आहि-वाहि-णासगो**-आधि-व्याधि नाशक **सिरि-कारगो**-श्री कारक **सत्ति-संचारगो**-शक्ति का संचारक **तह**-तथा **रेफ-जुदे**-रेफ युक्त होने पर **कज्ज-साहगो**-कार्य साधक **वि**-भी है।

णकार-संति-पदीगं, सत्ति-फोडग-धंसग-बीय-जणगो।
णह-बीयेसु पहाणो, दुक्कम्म-दाहगो अग्गीव।।70।।

अन्वयार्थ—णकारो-'ण' कार **संति-पदीगं**-शांति का प्रतीक **सत्ति-फोडग**-शक्ति का स्फोटक **धंसग-बीय-जणगो**-ध्वंसक बीज का जनक **णह-बीयेसु**-आकाश बीजों में **पहाणो**-प्रधान (और) **अग्गीव**-अग्नि के समान **दुक्कम्म दाहगो**-दुष्कर्मों का दाहक है।

आगरिसगो तकारो, सत्ति-उप्पादगो कज्ज-साहगो।
सव्व-सिद्धि-पदायगो, सह सारस्सद-बीजेणं च।।71।।

अन्वयार्थ—तकारो-'त' कार **आगरिसगो**-आकर्षक बीज है **सत्ति-उप्पादगो**-शक्ति का उत्पादक **कज्ज-साहगो**-कार्य साधक **च**-और **सारस्सद-बीजेणं**-सारस्वत बीज के **सह**-साथ **सव्व-सिद्धि-पदायगो**-सर्व सिद्धि प्रदायक है।

दकार-संति-कारगो, अप्पसत्ति-उप्पादगो वड्ढगो।
कम्म-खयिदुं पहाणो, वसीकरण-बीय-जणगो तह।।72।।

अन्वयार्थ—दकारो-'द' कार **संति-कारगो**-शांति कारक **अप्पसत्ति-उप्पादगो-वड्ढगो**-आत्म शक्ति का उत्पादक व वर्द्धक **कम्म-खयिदुं**-कर्म क्षय के लिए **पहाणो**-प्रधान **तह**-तथा **वसीकरण-बीय-जणगो**-वशीकरण बीजों का जनक है।

धकारो भयणासगो, माया-बीय-जणगो दोस-रहिदो।
बुहोव्व पइडि-जुत्तो य, सहायग-हिदेसी मित्तं व।।73।।

अन्वयार्थ—धकारो-'ध' कार **भयणासगो**-भयनाशक **माया-बीय-जणगो**-माया बीज का जनक **दोस-रहिदो**-दोष रहित **बुहोव्व**-बुध के समान **पइडि-जुत्तो**-प्रकृति से युक्त **सहायगो**-सहायक **य**-और **मित्तं व**-मित्र के समान **हिदेसी**-हितैषी है।

मकार-सिद्धिदायगो, उहय-कज्ज-साहग-उत्तमसुहदो।
संति-चित्त-विगासगो, वंस-वड्ढगो झाण-मूलो।।74।।

अन्वयार्थ—मकारो-'म' कार **सिद्धिदायगो**-सिद्धि दायक **उहय-कज्ज-साहगो**-उभय कार्य साधक **उत्तमसुहदो**-उत्तम सुख को देने वाला **संति-चित्त-विगासगो**-शांति चित्त विकासक **वंस-वड्ढगो**-वंश वर्द्धक और **झाण-मूलो**-ध्यान का मूल है।

यकार-संतिसाहगो, सत्तिग-साहणा-सिद्धि-कारगो य।
इट्ठ-वत्थूण हेदू, वर-कज्ज-साहगो झाणस्स।।75।।

अन्वयार्थ—यकारो-'य' कार **संतिसाहगो**-शांति का साधक **सत्तिग-साहणा-सिद्धि-कारगो**-सात्त्विक साधना की सिद्धि का कारक **इट्ठ-वत्थूण**-इष्ट वस्तुओं का **हेदू**-हेतु **झाणस्स**-ध्यान **य**-और **वर-कज्ज-साहगो**-उत्तम कार्य का साधक है।

रकारो अग्गिबीयं, कज्ज-साहगो सत्तु-णिवारगो य।
पहाण-बीय-जणगो हु, सत्ति-फोडगो संवड्ढगो।।76।।

अन्वयार्थ—रकारो-'र' कार **हु**-निश्चय से **अग्गिबीयं**-अग्नि बीज **कज्ज-साहगो**-कार्य साधक **सत्तु-णिवारगो**-शत्रु निवारक **पहाण-बीय-जणगो**-प्रधान बीजों का जनक **सत्ति-फोडगो**-शक्ति का स्फोटक **य**-और **संवड्ढगो**-संवर्द्धक है।

लकारो मोह-समणो, सेय-णिमित्तं लच्छि-कारगो तह।
दिव्व-रूव-पदायगो, पहुत्त-सुह-सत्ति-पदायगो।।77।।

अन्वयार्थ—लकारो-'ल' कार **मोह-समणो**-मोह का शमन करने वाला **सेय-णिमित्तं**-कल्याण का निमित्त **लच्छि-कारगो**-लक्ष्मी कारक **दिव्व-रूव-पदायगो**-दिव्य रूप प्रदायक **पहुत्त-सुह-सत्ति-पदायगो तह**-प्रभुत्व, सुख तथा शक्ति का प्रदायक है।

वकारो सिद्धि-जणगो, आगरिसगो अदिसय-कूड-जुत्तो।
सारस्सद-बीयं तह, सव्व-भय-उपद्दव-णासगो।।78।।
मंगल-साहगो आहि-वाहि-हणगो सव्व-सिद्धि-कारगो।
थंभगो धम्म-बीयं, दुक्ख-विग्घ-विणासगो तहा।।79।।

अन्वयार्थ—वकारो-'व' कार **सिद्धि-जणगो**-सिद्धि का जनक **आगरिसगो**-आकर्षक **अदिसय-कूड-जुत्तो तह**-अतिशय तथा कूट से युक्त **सारस्सद-बीयं**-सारस्वत बीज **सव्व-भय-उपद्दव-णासगो**-सर्व भय उपद्रव नाशक **मंगल-साहगो**-मंगल साधक **आहि-वाहि-हणगो**-आधि-व्याधि का हनन करने वाला **सव्व-सिद्धि-कारगो**-सर्व सिद्धि कारक **थंभगो**-स्तंभक **धम्म-बीयं**-धर्म बीज **दुक्ख-विग्घ-विणासगो तहा**-दु:ख तथा विघ्न का विनाशक है।

सकार-संति-दायगो, तुट्ठि-पुट्ठि-बीय-मंतेसु मुक्खो।
उहय-लच्छि-कारगो य, कम्म-णासगो अप्प-दिट्ठो।।80।।

अन्वयार्थ—सकारो-'स' कार **संति-दायगो**-शांति दायक **तुट्ठि-पुट्ठि-बीय-मंतेसु**-तुष्टि-पुष्टि बीज मंत्रों में **मुक्खो**-मुख्य **उहय-लच्छि-कारगो**-उभय लक्ष्मी कारक **कम्म-णासगो**-कर्म नाशक **य**-और **अप्प-दिट्ठो**-आत्म दृष्टा है।

हकारो कूडक्खरो, कम्म-णासगो मंगलपदीगं च।
सव्व-बीय-जणगो णह-तच्च-जुत्तो वंस-वड्ढगो।।81।।

अन्वयार्थ—हकारो-'ह' कार **कूडक्खरो**-कूट अक्षर **कम्म-णासगो**-कर्म नाशक **मंगलपदीगं**-मंगल का प्रतीक **सव्व-बीय-जणगो**-सर्व बीजों का जनक **णह-तच्च-जुत्तो**-आकाश तत्त्व से युक्त **च**-और **वंस-वड्ढगो**-वंश वर्द्धक है।

वर्ण-परमेष्ठी के प्रतीक

रत्तो अरिह-पदीगं, धवलो सिद्धाण पीदो सूरीण।
णीलो उवज्झायाण, विहि-णासग-साहूण कण्हो।।82।।

अन्वयार्थ—रत्तो-लाल रंग **अरिह-पदीगं**-अरिहंतों का प्रतीक है **धवलो**-धवल वर्ण **सिद्धाण**-सिद्धों का **पीदो**-पीत वर्ण **सूरीण**-आचार्यों का **णीलो**-नीला रंग **उवज्झायाण**-उपाध्यायों का (तथा) **कण्हो**-काला रंग **विहि-णासग-साहूण**-कर्मों को नष्ट करने वाले साधुओं का प्रतीक है।

वर्ण प्रभाव

लच्छि-पदीगं रत्तो, धवलो य अप्पविसुद्धि-संतीणं।
णेह-विगासग-पीदो, णाण-विड्ढीइ णील-वण्णो।।83।।

अन्वयार्थ—रत्तो-लाल रंग **लच्छि-पदीगं**-लक्ष्मी का प्रतीक है **धवलो**-श्वेत वर्ण **अप्पविसुद्धि-संतीणं य**-आत्मविशुद्धि और शांति का प्रतीक है **णेह-विगासग-पीदो**-पीला रंग स्नेह का विकासक और **णील-वण्णो**-नील वर्ण **णाण-वड्ढीइ**-ज्ञान वृद्धि का प्रतीक है।

दुब्भावणा-भय-रोग-सोग-चिंता-मोहाण-हणणस्स।
अघणासस्स पदीगं, कम्मक्खयस्स कण्ह-वण्णो।।84।।

अन्वयार्थ—कण्ह-वण्णो-काला रंग **दुब्भावणा-भय-रोग-सोग-चिंता-मोहाण**-दुर्भावना, भय, रोग, शोक, चिन्ता, मोह के **हणणस्स**-हनन का **पदीगं**-प्रतीक है **अघणासस्स**-पाप नाश का तथा **कम्मक्खयगस्स**-कर्म क्षय का प्रतीक है।

सव्व-रोग-हंतू तह, पाढग-पदीगं हरिद-वण्णो वा।
उच्छाहाणंद-सत्ति-वड्ढगो सुह-समिद्धि-हेदू।।85।।

अन्वयार्थ—वा-अथवा **पाढग-पदीगं**-पाठक का प्रतीक **हरिद-वण्णो**-हरा रंग **सव्व-रोग-हंतू**-सभी रोगों का हनन करने वाला **उच्छाहाणंद-सत्ति-वड्ढगो**-उत्साह, आनन्द व शक्ति का वर्द्धक **तह**-तथा **सुह-समिद्धि-हेदू**-सुख, समृद्धि का हेतु है।

जाप भेद

चदुविह-जावो चदुविह-दुक्ख-विणास-कारणं सव्वदा य।
अणंत-चदुक्क-बीअं, सव्व-सुहकरो भासिदो खलु।।86।।

अन्वयार्थ—चदुविह-जावो-चार प्रकार की जाप **सव्वदा**-सर्वदा **चदुविह-दुक्ख-विणास-कारणं**-चारों प्रकार के दु:ख के विनाश का कारण **अणंत-चदुक्क-बीअं**-अनंत चतुष्क का बीज **य**-और **खलु**-निश्चय से **सव्व-सुहकरो**-सबकी सुखकर **भासिदो**-कही गई है।

बेहरी मज्झमा तह, पस्संती सुहुमो चदुविह-जावो।
कमसो उत्तरुत्तरो, सुहविड्ढि-भाव-सुद्धि-हेदू।।87।।

अन्वयार्थ—बेहरी-बैखरी **मज्झमा**-मध्यमा **पस्संती**-पश्यंति **तह**-

तथा **सुहुमो**-सूक्ष्म **चदुविह-जावो**-चार प्रकार की जाप कही गई है (ये) **कमसो**-क्रमशः **उत्तरुत्तरो**-उत्तरोत्तर **सुहविड्ढि-भावसुद्धि-हेदू**-सुख वृद्धि व भाव शुद्धि का हेतु है।

जाप विधि

बहुविहा जाव-विही य, अंगुलि-घडिगा-कमलणुवेक्खाओ।
णवदेव-तच्च-पदत्थ-तव-माला जवेज्ज भत्तीइ।।88।।

अन्वयार्थ—जाव-विही-जाप विधि **बहुविहा**-बहुत प्रकार की है **अंगुलि-घडिगा-कमलणुवेक्खाओ**-अंगुलि, घटिका, कमल, अनुप्रेक्षा **णवदेव-तच्च-पदत्थ-तव-माला य**-नवदेवता, तत्त्व, पदार्थ, तप और माला इन्हें **भत्तीइ**-भक्ति से **जवेज्ज**-जपना चाहिए।

शुद्धि भेद

मूलरूवेण चदुहा, सुद्धी दव्व-खेत्त-याल-भावा य।
पत्तेय-वित्थरेणं, जाणेज्जा अणेग-भेया वि।।89।।

अन्वयार्थ—सुद्धी-शुद्धि **मूलरूवेण**-मूलरूप से **चदुहा**-चार प्रकार की है **दव्व-खेत्त-याल-भावा य**-द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव **पत्तेय-वित्थरेणं**-प्रत्येक के विस्तार से **अणेग-भेया**-अनेक भेद **वि**-भी **जाणेज्जा**-जानने चाहिए।

शुद्धि आवश्यक

दव्व-खेत्त-यालाणं, बीअं फलं जह देदि सुद्धीए।
तह दव्वाइ-सुद्धीइ, देदि मोक्खादि-फलं मंतो।।90।।

अन्वयार्थ—जह-जिस प्रकार **दव्व-खेत्त-यालाणं**-द्रव्य, क्षेत्र व काल की **सुद्धीए**-शुद्धि से **बीअं**-बीज **फलं**-फल को **देदि**-देता

है **तह**-उसी प्रकार **दव्वाइ-सुद्धीइ**-द्रव्यादि की शुद्धि से **मंतो**-मंत्र **मोक्खादि-फलं**-मोक्ष आदि फल **देदि**-प्रदान करता है।

त्रियोग शुद्धि से जप

सुह-मंत-णमोयारे, विज्जंति चदुसीदि-लक्खा मंता।
भव्वेहिं जविदव्वो, महामंतो हु तिसुद्धीए।।91।।

अन्वयार्थ—सुह-मंत-णमोयारे-शुभ णमोकार मंत्र में **चदुसीदि-लक्खा**-84 लाख **मंता**-मंत्र **विज्जंति**-विद्यमान हैं **भव्वेहिं**-भव्यों के द्वारा **हु**-निश्चय से **तिसुद्धीए**-तीन प्रकार (मन, वचन, काय) की शुद्धि से **महामंतो**-महामंत्र **जविदव्वो**-जपा जाना चाहिए।

मंत्र पठन क्रम

जहा-विवरीद-कमेण, पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी।
जहातहा जाहातत्थाणुपुव्वी मंत-पढणं च।।92।।

अन्वयार्थ—मंत-पढणं-मंत्र का पठन **जहाकमेण**-यथाक्रम से **पुव्वाणुपुव्वी**-पूर्वानुपूर्वी **विवरीद**-विपरीत क्रम से **पच्छाणुपुव्वी**-पाश्चात्यानुपूर्वी **च**-और **जहातहा**-यथा तथा **जाहातत्थाणुपुव्वी**-याथातथ्यानुपूर्वी कहलाता है।

कडुअ थिरं सगचित्तं, आणुपुव्वीइ जवेदि जो मंतं।
अणादियालादु बद्ध-कम्माणि सो णस्सदि णिच्चं।।93।।

अन्वयार्थ—जो-जो **सगचित्तं**-अपने चित्त को **थिरं**-स्थिर **कडुअ**-करके **आणुपुव्वीइ**-आनुपूर्वी से **मंतं**-मंत्र **जवेदि**-जपता है **सो**-वह **णिच्चं**-नित्य **अणादियालादु**-अनादिकाल से **बद्ध-कम्माणि**-बद्ध कर्मों को **णस्सदि**-नष्ट करता है।

कितने प्रकार से पठन ?

अठदस-सहस्सं तहा, चउसद-बत्तीस-पयारेण इणं।
जीवो पढिदुं सक्को, णमोयारं महामंतं हु।।94।।

अन्वयार्थ—हु-निश्चय से **इणं**-इस **णमोयारं**-णमोकार **महामंतं**-महामंत्र को **जीवो**-जीव **अठदस-सहस्सं**-18 हजार **तहा**-तथा **चउसद-बत्तीस-पयारेण**-चार सौ बत्तीस प्रकार से **पढिदुं**-पढ़ने में **सक्को**-समर्थ है।

जप संख्या

वसुकोडी वसुलक्खं, वसुसहस्सं वसुसदं वसुवारं।
जवेदि सुभावेहि जो, लहदे सिवपदं सिग्घं सो।।95।।

अन्वयार्थ—जो-जो **सुभावेहि**-शुभ भावों से **वसुकोडी**-8 करोड़ **वसुलक्खं**-8 लाख **वसुसहस्सं**-8 हजार **वसुसदं**-8 सौ **वसुवारं**-8 बार **जवेदि**-जप करता है **सो**-वह **सिग्घं**-शीघ्र **सिवपदं**-शिव पद **लहदे**-प्राप्त करता है।

शुक्र, चंद्र, राहु ग्रह शांति हेतु जप

चंद-सुक्क-राहूणं, कुप्पहावो विणस्सदि हु मंतेण।
पढमं पदं जवेज्जा, दससहस्सवारं संतीइ।।96।।

अन्वयार्थ—हु-निश्चय से **मंतेण**-मंत्र से **चंद-सुक्क-राहूणं**-चंद्र, शुक्र, राहु ग्रहों का **कुप्पहावो**-कुप्रभाव **विणस्सदि**-नष्ट होता है (इनकी) **संतीइ**-शांति के लिए **दस-सहस्सवारं**-दस हजार बार **पढमं**-प्रथम **पदं**-पद की **जवेज्जा**-जप करनी चाहिए।

सूर्य, मंगल, केतु ग्रह शांति हेतु जप

अक्क-भोम-केदूणं, कुप्पहावो विणस्सदि हु मंतेण।
विदियं पदं जवेज्जा, संतीइ दससहस्सवारं।।97।।

अन्वयार्थ—मंतेण-मंत्र जप से **अक्क-भोम-केदूणं**-सूर्य, मंगल व केतु का **कुप्पहावो**-कुप्रभाव **हु**-निश्चय से **विणस्सदि**-नष्ट होता है (इनकी) **संतीइ**-शांति के लिए **दससहस्सवारं**-दस हजार बार **विदियं**-द्वितीय **पदं**-पद की **जवेज्जा**-जप करनी चाहिए।

गुरुग्रह शांति हेतु जप

कुंडलीइ गुरुगहस्स, णस्सिदुं असुहफलं कुप्पहावं।
तिदियं पदं जवेज्जा, भावेहि दससहस्सवारं।।98।।

अन्वयार्थ—कुंडलीइ-कुंडली में **गुरुगहस्स**-गुरु ग्रह के **असुहफलं**-अशुभ फल व **कुप्पहावं**-कुप्रभाव के **णस्सिदुं**-नाश के लिए **भावेहि**-भावों से **दससहस्सवारं**-दस हजार बार **तिदियं**-तृतीय **पदं**-पद **जवेज्जा**-जपना चाहिए।

बुध ग्रह शांति हेतु जप

देदि पीडं बुहो जदि, णाणं णस्सदि हणदि सया बुद्धिं।
चदुत्थं पदं जवेज्ज, संतीइ दससहस्सवारं।।99।।

अन्वयार्थ—जदि-यदि **बुहो**-बुध ग्रह जीव को **पीडं**-पीड़ा **देदि**-देता है (उसका) **णाणं**-ज्ञान **णस्सदि**-नष्ट करता है **बुद्धिं**-बुद्धि का **हणदि**-हनन करता है (तो उसकी) **संतीइ**-शांति के लिए **दससहस्सवारं**-दस हजार बार **चदुत्थं**-चतुर्थ **पदं**-पद की **सया**-सदा **जवेज्ज**-जप करनी चाहिए।

शनि ग्रह शांति हेतु जप

कुंडलीए सणिगहो, णस्सेदि धण-धण्ण-सुह-संपत्तिं।
पंचमं पदं जवेज्ज, संतीइ दससहस्सवारं।।100।।

अन्वयार्थ—यदि **कुंडलीए**-कुंडली में **सणिगहो**-शनि ग्रह **धण-धण्ण-सुह-संपत्तिं**-धन, धान्य, सुख, संपत्ति **णस्सेदि**-नष्ट करता है (तो उसकी) **संतीइ**-शांति के लिए **दस-सहस्सवारं**-दस हजार बार **पंचमं**-पंचम **पदं**-पद की **जवेज्ज**-जप करनी चाहिए।

मंत्र पठन

जवेज्जा णमोयारं, जागरिया-पच्छा सयण-पुव्वं च।
दुस्सिविणा विणस्संति, सुह-संतिमय-मंगल-दिणं वि।।101।।

अन्वयार्थ—**जागरिया-पच्छा**-जागने के पश्चात् **च**-और **सयण-पुव्वं**-शयन के पूर्व **णमोयारं**-णमोकार मंत्र **जवेज्जा**-जपना चाहिए इससे **दुस्सिविणा**-दुःस्वप्न **विणस्संति**-नष्ट होते हैं (और) **सुह-संति-मंगलमय-दिणं वि**-दिन भी सुख शांति व मंगलमय होता है।

जवेज्जा णमोयारं, सद्धाए पडिदिणं हु पडिसमयं।
मिच्छत्तादी खयंति, लहिय सम्मत्तं लहदि सिवं।।102।।

अन्वयार्थ—जो **सद्धाए**-श्रद्धा से **पडिदिणं**-प्रतिदिन **पडिसमयं**-प्रति समय **णमोयारं**-णमोकार मंत्र **जवेज्जा**-जपता है उसके **मिच्छत्तादी**-मिथ्यात्व आदि **खयंति**-नष्ट होते हैं (तथा वह) **हु**-निश्चय से **सम्मत्तं**-सम्यक्त्व **लहिय**-प्राप्त कर **सिवं**-मोक्ष **लहदि**-प्राप्त करता है।

पुण्यकारक

जवेज्ज णमोयारं वि, जीवा पूदापूदावत्थाए।
तह पुण्णं सय मंतो, देदि जह चंदो सीयलदं।।103।।

अन्वयार्थ—जीवा-जीवों को **पूद-अपूदावत्थाए**-पवित्र व अपवित्र अवस्था में **वि**-भी **णमोयारं**-णमोकार मंत्र **जवेज्ज**-जपना चाहिए **जह**-जिस प्रकार **चंदो**-चंद्रमा **सीयलदं**-शीतलता **देदि**-देता है **तह**-उसी प्रकार **मंतो**-मंत्र **सय**-सदा **पुण्णं**-पुण्य देता है (अर्थात् पुण्य का कारण है।)

मंत्र जप कहाँ ?

पूदापूदे ठाणे, जवेज्ज पयासं देदि जह अक्को।
तह मंत-णमोयारो, सव्वट्ठाणेसु सुह-संतिं।।104।।

अन्वयार्थ—पूदापूदे ठाणे-पवित्र व अपवित्र स्थान में भी **जवेज्ज**-णमोकार मंत्र जपना चाहिए **जहा**-जिस प्रकार **अक्को**-अर्क अर्थात् सूर्य सभी जगह **पयासं** -प्रकाश **देदि**-देता है **तह**-उसी प्रकार **मंत-णमोयारो**-णमोकार मंत्र **सव्वट्ठाणेसु**-सभी स्थानों पर **सुह-संतिं**-सुख-शांति देता है।

मंत्र माहात्म्य

णमोयारं विणा णो, समत्थो होदुं कालजयिं को वि।
कया वि अणंतयाले, भासिदो मंतमहप्पुरो हु।।105।।

अन्वयार्थ—णमोयारं-णमोकार के **विणा**-बिना **को वि**-कोई भी **अणंतयाले**-अनंतकाल में भी **कया वि**-कदापि **कालजयिं**-कालजयी **होदुं**-होने में **समत्थो**-समर्थ **णो**-नहीं है **हु**-निश्चय से (ऐसा) **मंतमहप्पुरो**-मंत्र का माहात्म्य **भासिदो**-कहा गया है।

शिव बीज

णमोयार-सिवबीअं, भणिदं णिव्वाण-कारणं जिणेहि।
विणा मंतं णो को वि, सक्को सिव-लहिदुं तियाले।।106।।

अन्वयार्थ—णमोयार-सिवबीअं-णमोकार शिव का बीज है **जिणेहि**-जिनेन्द्रों के द्वारा (यह) **णिव्वाण-कारणं**-निर्वाण का कारण **भणिदं**-कहा गया है **तियाले**-तीन काल में **मंतं**-मंत्र के **विणा**-बिना **को वि**-कोई भी **सिव-लहिदुं**-मोक्ष प्राप्त करने में **सक्को**-समर्थ **णो**-नहीं है।

सर्वसौख्यकारक

सव्व-णस्सर-वत्थूणि, सुहाभास-कारणं विस्सस्स खलु।
णमोयार-मंतेसो, णियमेण सव्व-सोक्ख-हेदू।।107।।

अन्वयार्थ—विस्सस्स-विश्व की **सव्व-णस्सर-वत्थूणि**-सभी नश्वर वस्तुएँ **खलु**-निश्चय से **सुहाभास-कारणं**-सुखाभास का कारण हैं **एसो**-यह **णमोयार-मंतो**-णमोकार मंत्र **णियमेण**-नियम से **सव्व-सोक्ख-हेदू**-सर्व सौख्य का हेतु है।

रत्नत्रय प्राप्ति

णमोयार-मंतेणं, खयदि मिच्छत्तय-तिमिरं णियमेण।
सम्मत्त-णाण-चरियं, आविहवदे अप्पम्मि तहा।।108।।

अन्वयार्थ—णमोयार-मंतेणं-णमोकार मंत्र से **णियमेण**-नियम से **मिच्छत्तय-तिमिरं**-मिथ्यात्वत्रय का अंधकार **खयदि**-नष्ट होता है **तहा**-तथा **सम्मत्त-णाण-चरियं**-सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान व सम्यग्चारित्र **अप्पम्मि**-आत्मा में **आविहवदे**-प्रकट होता है।

भवतारक

परिअट्टदि संसारे, अणाइयालादु जीवो कम्मेहि।
जाण मंतमहप्पुरो, तस्स भवं हु खयदे जवेण।।109।।

अन्वयार्थ—जीवो-जीव **अणाइयालादु**-अनादिकाल से **कम्मेहि**-कर्मों से **संसारे**-संसार में **परिअट्टदि**-परिभ्रमण कर रहा है **जवेण**-महामंत्र के जाप से **हु**-निश्चय से **तस्स**-उसका **भवं**-संसार **खयदे**-नष्ट हो जाता है ऐसा **मंतमहप्पुरो**-मंत्र का माहात्म्य **जाण**-जानो।

स्वभाव कारक

देहातीद-सहावो, णिस्सीम-भव-सायरे भव्वाणं।
णमोयार-मंतेसो, सहाव-गहण-हेदू णेयो।।110।।

अन्वयार्थ—णिस्सीम-भव-सायरे-निःसीम भव सागर में **भव्वाणं**-भव्यों का **देहातीद-सहावो**-देहातीत स्वभाव है **एसो**-यह **णमोयार-मंतो**-णमोकार मंत्र **सहाव-गहण-हेदू**-स्वभाव के ग्रहण का हेतु **णेयो**-जानना चाहिए।

विशुद्ध ऊर्जाकारक मंत्र

विसुद्ध-उज्ज-करणं च, सव्व-रोय-सोग-दुक्ख-भय-हरणं।
समाहिमरण-कारणं, सुमंतो मुत्ति-सिरि-वरणस्स।।111।।

अन्वयार्थ—सुमंतो-सुमंत्र णमोकार **विसुद्ध-उज्ज-करणं**-विशुद्ध ऊर्जा का करने वाला **सव्व-रोय-सोग-दुक्ख-भय-हरणं**-सभी रोग, शोक, दुःख व भय का हरण करने वाला **समाहि-मरण-कारणं**-समाधिमरण का कारण **च**-और **मुत्ति-सिरि-वरणस्स**-मुक्ति श्री के वरण का कारण है।

गुणोत्पादक

दव्व-खेत्त-काल-भाव-चित्त-विसुद्धीइ कारणं मंतो।
दोस-विणासग-सत्थं, गुण-रुहुप्पायग-मिट्ठ-जलं।।112।।

अन्वयार्थ—मंतो-णमोकार मंत्र **दव्व-खेत्त-काल-भाव-चित्त-विसुद्धीइ**-द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव व चित्त की विशुद्धि का **कारणं**-कारण है **दोस-विणासग-सत्थं**-दोषों का नाश करने वाला शस्त्र है तथा **गुण-रुहुप्पायग-मिट्ठ-जलं**-गुण रूपी वृक्ष को उत्पन्न करने वाला मिष्ट जल है।

णमोकार का अचिंत्य प्रभाव

होज्ज चंदोव्व सूरो, अग्गी णीरं व सायरो थलोव्व।
दुट्ठो सुजणोव्व रिऊ, मित्तं व होज्ज मह-मंतेण।।113।।

अन्वयार्थ—महमंतेण-महामंत्र से **सूरो**-सूर्य **चंदोव्व**-चंद्र के समान **अग्गी**-अग्नि **णीरं व**-नीर के समान **होज्ज**-हो जाती है **सायरो**-सागर **थलोव्व**-स्थल के समान **दुट्ठो**-दुष्ट **सुजणोव्व**-सज्जन के समान **रिऊ**-शत्रु **मित्तं व**-मित्र के समान **होज्ज**-हो जाते हैं।

रायोव्व होज्ज दीणो, मूढो णाणी कुरूव-रूवस्सी।
कसाय-जुदो पसंतो, सिग्घं णमोयार-मंतेण।।114।।

अन्वयार्थ—णमोयार-मंतेण-णमोकार मंत्र से **दीणो**-गरीब **रायोव्व**-राजा के समान, **मूढो**-मूर्ख **णाणी**-ज्ञानी, **कुरूवो**-कुरूप **रूवस्सी**-रूपवान्, **कसाय-जुदो**-कषाय से युक्त **सिग्घं**-शीघ्र **पसंतो**-प्रशान्त **होज्ज**-हो जाता है।

णीयो वि उच्च-गोत्ती, कुलेस्सा-जुत्तो तह सुलेस्साए।
बंधगो सुगेहजुदो, पाविट्ठो अदि-पुण्णवंतो।।115।।

दुज्झाऊ सुहझाऊ, मिच्छाइट्ठी पावदि सम्मत्तं।
वदहीणो महव्वदी, मणुजगदिं लहदि णेरइयो।।116।।

होज्ज अदि-दुक्खवंतो, सस्सद-सुहं पप्पोदुं समत्थो।
हिंसगो वि अहिंसगो, मोसभासगो सच्चवायी।।117।।

दुज्जणाधम-कुसीलो, सज्जण-सेट्ठो होज्ज सीलवंतो।
परिग्गह-विसय-जुत्तो, णिग्गंथो वीदरायी तह।।118।।

पूजगो होदि पुज्जो, रोयी णिरोयी भत्त-भगवंतो।
संकिलेसभावजुदो, विसुद्ध-णिम्मल-चित्त-जीवो।।119।।

बंधगो होज्ज मुत्तो, मुंचिदूणं तह बंध-दुक्खाइं।
चिरजीवी होदि सया, णमोयार-पहावेण णरो।।120।।

अन्वयार्थ—णमोयार-पहावेण-णमोकार मंत्र के प्रभाव से **णीयो**-नीच **उच्च-गोत्ती**-उच्च गोत्री **कुलेस्सा-जुत्तो**-कुलेश्या से युक्त जीव **सुलेस्साए**-सुलेश्या से युक्त **बंधगो**-बंधक **सुगेह जुदो**-श्रेष्ठ गृह से युक्त **तह**-तथा **पाविट्ठो**-पापिष्ठ **वि**-भी **अदि-पुण्णवंतो**-अति पुण्यवान् हो जाता है **दुज्झाऊ**-दुर्ध्यानी **सुहझाऊ**-शुभध्यानी हो जाता है **मिच्छाइट्ठी**-मिथ्यादृष्टि **सम्मत्तं**-सम्यक्त्व **पावदि**-प्राप्त करता है **वदहीणो**-व्रत हीन **महव्वदी**-महाव्रती हो जाता है **णेरइयो**-नारकी **मणुजगदिं**-मनुष्य गति **लहदि**-प्राप्त करता है **अदि-दुक्ख-वंतो**-अति दु:खवान् **सस्सद-सुहं**-शाश्वत सुख **पप्पोदुं**-पाने में **समत्थो**-समर्थ **होज्ज**-होता है **हिंसगो**-हिंसक **वि**-भी **अहिंसगो**-अहिंसक, **मोसभासगो**-मिथ्याभाषी **सच्चवायी**-सत्यवादी हो जाता है **दुज्जणो**-दुर्जन **सज्जणो**-सज्जन, **अधमो**-अधम **सेट्ठो**-श्रेष्ठ **तह**-तथा **कुसीलो**-कुशील **सीलवंतो**-शीलवान् **होज्ज**-हो जाता है **परिग्गह-विसय-जुत्तो**-परिग्रह व विषय से युक्त **णिग्गंथो**-निर्ग्रन्थ

व **वीदरायी**-वीतरागी हो जाता है **पूजगो**-पूजक **पुज्जो**-पूज्य **होदि**-होता है **रोयी**-रोगी **णिरोयी**-निरोगी **भत्तो**-भक्त **भगवंतो**-भगवान् व **संकिलेसभावजुदो**-संक्लेश भाव से युक्त **जीवो**-जीव **विसुद्ध-णिम्मल-चित्तो**-विशुद्ध व निर्मल चित्त वाला हो जाता है **बंधगो**-बंधक **मुत्तो**-मुक्त **होज्ज**-हो जाता है **तह**-तथा **बंध-दुक्खाइं**-बंध के दु:खादि को **मुंचिदूणं**-छोड़कर **णरो**-नर **सया**-सदा **चिरजीवी**-चिरजीवी **होदि**-होता है।

दुब्भगो होदि सुभगो, दुस्सर-जुदो सुस्सरो सुमंतेण।
अंधय-बहिरा मुक्को, लोयण-कण्ण-वयणवंतो य।।121।।

विजयं लहदे जुज्झे, अरण्णं होदि सुरपुज्ज-भवणं व।
होज्ज भुयंगो हारो, असिपहरो तह पुप्फविट्ठी।।122।।

अन्वयार्थ—सुमंतेण-शुभ मंत्र (णमोकार) से **दुब्भगो**-दुर्भाग्यवान् **सुभगो**-सौभाग्यवान् **दुस्सर-जुदो**-दु:स्वर युक्त **सुस्सरो**-सुस्वर वाला **अंधय-बहिरा**-अंधा, बहरा **य**-और **मुक्को**-गूंगा **लोयण-कण्ण-वयणवंतो**-लोचनवान्, कर्णवान् और वचनवान् **होदि**-होता है **जुज्झे**-युद्ध में **विजयं**-विजय **लहदे**-प्राप्त करता है **अरण्णं**-अरण्य **सुरपुज्ज-भवणं व**-सुर पूज्य भवन के समान **होदि**-होता है **भुयंगो**-भुजंग **हारो**-हार **होज्ज**-हो जाता है **तह**-तथा **असिपहरो**-तलवार का प्रहार **पुप्फविट्ठी**-पुष्पवृष्टि हो जाता है।

त्रिलोकपति कौन ?

जो जवदे तिक्काले, खवित्ता तिविह-कम्माणि होदि सो।
तिलोयपदी णियमेण, परम-सुद्धो खलु भव्वुल्लो।।123।।

अन्वयार्थ—जो-जो **तिक्काले**-तीनों काल में **जवदे**-मंत्र जपता

है **सो**-वह **तिविह-कम्माणि**-त्रिविध कर्मों को **खवित्ता**-नष्ट कर **णियमेण**-नियम से **तिलोयपदी**-त्रिलोक पति **होदि**-होता है **खलु**-निश्चय से (वह) **भव्वुल्लो**-भव्य **परम-सुद्धो**-परम शुद्ध होता है।

उज्झीअ जिजीविसं च, उक्किट्ठारोग्गं लहदि मंतेण।
हाणि-पत्तो जीवो हु, बहुलाहं पावेदि णिच्चं।।124।।

अन्वयार्थ—जिसने **जिजीविसं**-जीने की इच्छा **उज्झीअ**-त्याग दी वह **णिच्चं**-नित्य **मंतेण**-मंत्र (जप) से **उक्किट्ठारोग्गं**-उत्कृष्ट आरोग्य **लहदि**-प्राप्त करता है **हु**-निश्चय से **हाणि-पत्तो**-हानि प्राप्त **जीवो**-जीव **बहुलाहं**-बहुत लाभ को **पावेदि**-प्राप्त करता है।

कुप्रभाव नाशक

गिहाण कुप्पहावस्स, करेज्ज जिणपूयणं णिवट्टीए।
जवज्झाणं चिंतणं, णस्संति गहारिट्ठाणि सय।।125।।

अन्वयार्थ—**गिहाण**-ग्रहों के **कुप्पहावस्स**-कुप्रभाव की **णिवट्टीए**-निवृत्ति के लिए **जिणपूयणं**-जिनपूजन **करेज्ज**-करनी चाहिए **जवज्झाणं**-जप, ध्यान **चिंतणं**-चिंतन **सय**-सदा **गहारिट्ठाणि**-ग्रहों के अरिष्टों को **णस्संति**-नष्ट करते हैं।

प्रणव बीज

ण अवमण्णेज्ज कया वि, एगक्खरं णमोयार-मंतस्स।
मंतिणं पणव-बीअं, तं झायेज्ज ओमरूवेण।।126।।

अन्वयार्थ—**णमोयार-मंतस्स**-णमोकार मंत्र के **एगक्खरं**-एक अक्षर का भी **कया वि**-कदापि **ण अवमण्णेज्ज**-अपमान नहीं करना चाहिए **इणं**-यह **मंतो**-मंत्र **पणव-बीअं**-प्रणव बीज है **तं**-उसका भी **ओमरूवेण**-ओम् रूप से **झायेज्ज**-ध्यान करना चाहिए।

मंत्र ध्यान फल

जे भव्वा झायंते, एगक्खरं वि णमोयारस्स खलु।
खयंति ताण कम्माणि, बहुभवाण अंतरमुहुत्ते।।127।।

अन्वयार्थ—जे-जो **भव्वा**-भव्य जीव **णमोयारस्स**-णमोकार मंत्र के **एगक्खरं**-एक अक्षर का **वि**-भी **झायंते**-ध्यान करते हैं **खलु**-निश्चय से **ताण**-उनके **बहुभवाण**-बहुत भवों के **कम्माणि**-कर्म **अंतरमुहुत्ते**-अंतर्मुहूर्त में **खयंति**-नष्ट हो जाते हैं।

अपमान से नरक

कया वि कस्स वि याले, मंतो अवमण्णीयो ण भव्वेहि।
सुहोमचक्किणा णिरय-गदी से लहिदावमाणेण।।128।।

अन्वयार्थ—कया वि-कभी भी **कस्स वि**-किसी भी **याले**-काल में **भव्वेहि**-भव्यों के द्वारा **मंतो**-मंत्र **ण अवमण्णीयो**-अपमानित नहीं किया जाना चाहिए। **से**-उस मंत्र के **अवमाणेण**-अपमान से **सुहोम-चक्किणा**-सुभौम चक्रवर्ती के द्वारा **णिरयगदी**-नरक गति **लहिदा**-प्राप्त की गयी।

णमोयार-चिंतणेण, सिवभूदाइ-अणेग-मुणिवरेहिं।
मोक्खं लहिदं तम्हा, मंतो जविदव्वो भव्वेहि।।129।।

अन्वयार्थ—णमोयार-चिंतणेण-णमोकार मंत्र के चिंतन से **सिवभूदाइ-अणेग-मुणिवरेहिं**-शिवभूति आदि अनेक मुनिवरों के द्वारा **मोक्खं**-मोक्ष **लहिदं**-प्राप्त किया गया **तम्हा**-इसीलिए **भव्वेहि**-भव्यों के द्वारा **मंतो**-नवकार मंत्र **जविदव्वो**-जपा जाना चाहिए।

मंत्रजप फल को प्राप्त जीव

अंजण-सुवण्णखुरेहि, तहा विज्जुद-दिढसूर-चोरेहिं।
वारिसेण-वरंगेहि, सुभग-धणदत्त-भरहेहिं च।।130।।

दीवाणमरचंदेण, कुंडकुंडाकलंक-सुभोमेहिं।
कुमुदचंद-वादिराय-धणंजय-जमपालेहि तहा।।131।।

रयणासिट्ठि-पुप्फदंत-भूदबलि-सिरिवाल-सुदंसणेहिं।
समंतभद्द-रामेहि, सणक्कुमार-सगरचक्कीहि।।132।।

मरणासण्ण-णरेणं, रसकूवे तहेव खदिरसारेण।
चारुदत्त-पुरुरवेहि, अरहद्दासाइ-माणवेहि।।133।।

धण्णंकर-पुण्णंकर, णल-णील-बाहु-अग्गिभूदीहिं च।
पोम्मरुइ-मेहरहेहि, सग्गदी लहिदा मंतेणं।।134।।

अन्वयार्थ—अंजण-सुवण्णखुरेहि -अंजन, स्वर्णखुर **विज्जुद-** विद्युत **तहा**-तथा **दिढसूर-चोरेहिं**-दृढ़सूर्य चोर **वारिसेण-वरंगोहि** -वारिषेण, वरांग कुमार **सुभग-धणदत्त-भरहेहिं च**-सुभग, धनदत्त व भरत **दीवाण-अमरचंदेण**-अमरचंद दीवान **कुंडकुंडाकलंक-सुभोमेहिं**-आचार्य कुंदकुंद, अकलंक, सुभौम चक्रवर्ती **कुमुदचंद-वादिराय-धणंजय-जमपालेहि तहा**-आचार्य कुमुदचंद्र, वादिराज धनंजय तथा यमपाल **रयणासिट्ठि-पुप्फदंत-भूदबलि-सिरिवाल-सुदंसणेहिं**-रत्न श्रेष्ठी, आचार्य पुष्पदंत, भूतबली, श्रीपाल, सुदर्शन **समंतभद्द-रामेहि**-आचार्य समंतभद्र, राम **सणक्कुमार-सगरचक्कीहि**-सनत्कुमार, सगर चक्रवर्ती **रसकूवे**-रसकूप में पड़े **मरणासण्ण-णरेणं**-मरणासन्न मनुष्य **तहेव**-उसी प्रकार **खदिरसारेण**-खदिरसार भील **चारुदत्त-पुरुरवेहि**-चारुदत्त पुरूरवा

अरहद्दासाइ-माणवेहि-अर्हद्दास आदि मानव **धण्णंकर-पुण्णंकर, णल-णील-बाहु-अग्गिभूदीहिं च**-धण्णंकर, पुण्णंकर, नल, नील, बाहु, अग्निभूति **पोम्मरुइ-मेहरहेहि**-पद्मरुचि, मेघरथ ने **मंतेणं**-मंत्र के द्वारा **सग्गदी**-सद्गति **लहिदा**-प्राप्त की।

जिणदत्ता-सीदाहिं, सोमा, णीलि-अणंतमदीहि तहा।
मणोरमा-सुरसुंदरि-मणोवदि-मिगंगलेहाहिं।।135।।

चंदणंजणा-रेवदि-बंभि-सुंदरि-अणंगसराहि तहा।
तुंगभद्दा-मइणाहि, अवि पंचालि-दमजंतीहिं।।136।।

सुणमोयार-मंतस्स, जवेण सुईए हु सवणादीए।
तहा अण्ण-णारीहिं, पाविदा सग्गदी सव्वदा।।137।।

अन्वयार्थ—जिणदत्ता-सीदाहिं-जिनदत्त, सीता **सोमा, णीलि-अणंतमदीहि तहा**-सोमा, नीली तथा अनंतमती **मणोरमा-सुरसुंदरि, मणोवदि-मिगंगलेहाहिं**-मनोरमा, सुरसुंदरी, मनोवती, मृगांकलेखा **चंदणंजणा-रेवदि-बंभि-सुंदरि-अणंगसराहि तहा**-चंदनबाला, अंजना, रेवती, ब्राह्मी, सुन्दरी तथा अनंगसरा **तुंगभद्दा-मइणाहि**-तुंगभद्रा, मैना **पंचालि-दमजंतीहिं**-पंचाली, दमयंती **तहा**-तथा **अण्ण-णारीहिं**-अन्य नारियों के द्वारा **अवि**-भी **सव्वदा**-सर्वदा **सुणमोयार-मंतस्स**-शुभ णमोकार मंत्र के **जवेण**-जाप **सुईए**-स्मृति व **सवणादीए**-श्रवण आदि से **सग्गदी**-सद्गति **पाविदा**-प्राप्त की गई।

फल प्राप्त करने वाले तिर्यंच

सियार-हंस-सीह-अज-महिस-सूगर-मिग-कवोदजुगलेहि।
हत्थिणि-करि-सारमेअ-वाणरुसह-णाग-णागिणीहि।।138।।

तह सुगादि-जंतूहिं, पाविदा सग्गदी णमोयारेण।
गंथ-वित्थर-भयेण ण, उल्लिहिदाणि अण्ण-णामाणि।।139।।

अन्वयार्थ—सियार-हंस-सीह-अज-महिस-सूगर-मिग-कवोदजुगलेहि-सियार, हंस, सिंह, बकरा, भैंस, सूअर, हरिण, कपोत युगल **हत्थिणि-करि-सारमेअ-वाणर-उसह-णाग-णागिणीहि**-हथिनी, हाथ, कुत्ता, बंदर, बैल, नाग-नागिन **तह**-तथा **सुगादि-जंतूहिं**-तोता आदि जंतुओं के द्वारा **णमोयारेण**-णमोकार मंत्र से **सग्गदी**-सद्गति **पाविदा**-प्राप्त की गई **अण्ण-णामाणि**-अन्य बहुत नाम **गंथ-वित्थर-भयेण**-ग्रंथ विस्तार के भय से यहाँ **ण उल्लिहिदाणि**-उल्लिखित नहीं किए गए।

दोष नाशक

काल-सप्पण्ण-दोसा, बेदहविहा य देंति बहुदुक्खाणि।
ताण उवायस्स सया, णवयारं जवेज्ज भावेहि।।140।।

अन्वयार्थ—बेदहविहा-बारह प्रकार के **काल-सप्पण्ण-दोसा य**-काल सर्प दोष वा अन्य दोष **बहु-दुक्खाणि**-बहुत दुःखों को **देंति**-देते हैं **ताण**-उनके **उवायस्स**-उपाय के लिए **भावेहि**-भावों से **सया**-सदा **णवयारं**-णमोकार मंत्र **जवेज्ज**-जपना चाहिए।

मंगलि-भगूड-तारा-वण्ण-मेत्ति-जोणि-गण-वेस्स-दोसा।
महामंतेण खयंति, णाडि-लग्ग-चंदाइ-दोसा।।141।।

अन्वयार्थ—मंगलि-भगूड-तारा-वण्ण-मेत्ति-जोणि-गण-वेस्स-दोसा-मंगली दोष, भकूट दोष, तारा दोष, वर्ण दोष, मैत्री, योनि, गण, वैश्य दोष **णाडि-लग्ग-चंदाइ दोसा**-नाड़ी, लग्न और चंद्रादि दोष **महामंतेण**-महामंत्र से **खयंति**-नष्ट हो जाते हैं।

भूतादि निवारक

भूद-पेद-पिसल्लेहि, डाकिणि-साकिणि-वंतरकदाणि वा।
भवण-जोदिस-कदाणि हु, खयंति बहुदुहाणि मंतेण।।142।।

अन्वयार्थ—भूद-पेद-पिसल्लेहि-भूत-प्रेत, पिशाच **डाकिणि-साकिणि-वंतरकदाणि**-डाकिनी, शाकिनी व्यंतर कृत **वा**-अथवा **भवण-जोदिस-कदाणि**-भवनवासी वा ज्योतिष देव कृत **बहुदुहाणि**-बहुत दु:ख **हु**-निश्चय से **मंतेण**-महामंत्र द्वारा **खयंति**-नष्ट हो जाते हैं।

तंत्रविद्या हारक

मारण-थंबुच्चाडण-उवसग्ग-घाद-वसीकरण-दोसा।
अण्णा बहुविहपीडा, खयंति णमोयार-जावेण।।143।।

अन्वयार्थ—मारण-थंबुच्चाडण-उवसग्ग-घाद-वसीकरण-दोसा-मारण, स्तंभन, उच्चाटन, उपसर्ग, घात, वशीकरण दोष वा **अण्णा**-अन्य **बहुविहपीडा**-बहुत प्रकार की पीड़ा **णमोयार-जावेण**-णमोकार मंत्र की जाप से **खयंति**-नष्ट हो जाती है।

ग्रहकष्ट नाशक

दिणयर-चंद-भोम-बुह-गुरु-सुक्क-सणि-गहेहिं सव्वदा हि।
राहु-केदु-किद-सव्वा पीडा खयंति सुहमंतेण।।144।।

अन्वयार्थ—दिणयर-चंद-भोम-बुह-सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध **गुरु-सुक्क-अक्कपुत्त-गहेहि**-गुरु, शुक्र, शनि ग्रह **राहु-केदु-किद-सव्वा**-राहु व केतु कृत सर्व **पीडा**-पीड़ाएँ **सुहमंतेण**-शुभ मंत्र जाप से **सव्वदा हि**-सर्वदा ही **खयंति**-नष्ट होती हैं।

नरपशुकृत पीड़ानाशक

दुट्ठ-राय-चोरेहिं, तक्कर-सव्वहिंसग-जंतूहिं च।
वइरि-पावि-मूढेहिं, कद-पीडा खयंति मंतेण।।145।।

अन्वयार्थ—दुट्ठ-राय-चोरेहिं-दुष्ट, राजा, चोर **तक्कर-सव्वहिंसग-जंतूहिं**-तस्कर, सभी हिंसक जंतू **वइरि-पावि-मूढेहिं** बैरी, पापी और मूर्ख **कद-पीडा च**-कृत पीड़ाएँ **मंतेण**-मंत्र से **खयंति**-नष्ट हो जाती हैं।

रोग नाशक

वाद-पित्त-कफुप्पण्ण-बहुरोया खलु दिक्खंति देहम्मि।
महामंत-पहावेण, विणस्संति हि अइ-सिग्घं ते।।146।।

अन्वयार्थ—वाद-पित्त-कफुप्पण्ण-बहुरोया-वात-पित्त-कफ से उत्पन्न बहुत रोग **देहम्मि**-देह में **दिक्खंति**-दिखाई देते हैं **खलु**-निश्चय से **महामंत-पहावेण**-महामंत्र के प्रभाव से **ते**-वे **अइ-सिग्घं**-अति शीघ्र **हि**-ही **विणस्संति**-नष्ट हो जाते हैं।

कास-दमा-वमण-गहणि-जलोयर-खुज्जिय-मूय-अरसादी।
हिअय-घादुयर-रोया, विणस्संति मंत-जावेणं।।147।।

अन्वयार्थ—हिअय-घादुयर-रोया-हृदय घात, उदर रोग **कास-दमा-वमण-गहणि-जलोयर-खुज्जिय-मूय-अरसादी**-खाँसी, दमा, वमन, ग्रहणी (दस्तों का रोग), जलोदर, कूबड़ापन, गूंगापन, बवासीर आदि रोग **मंतजावेणं**-मंत्र जाप से **विणस्संति**-नष्ट हो जाते हैं।

मनोरथ-पूरक

पत्तेय-दुह-णासगो, सव्व-मणोरह-पूरगो मंतो हु।
अपुव्व-मित्तं एसो, सामी सेवगो सहयरो य।।148।।

अन्वयार्थ—एसो-यह **मंतो**-मंत्र **हु**-निश्चय से **पत्तेय-दुह-णासगो**-प्रत्येक दु:ख का नाशक **सव्व-मणोरह-पूरगो**-सर्व मनोरथ पूरक **अपुव्व-मित्तं**-अपूर्व मित्र **सामी**-स्वामी **सेवगो**-सेवक **य**-और **सहयरो**-सहचर भी है।

पद दायक

णमोयार-मंतेसो, सय परमेट्ठि-णमोक्कार-णिमित्तं।
लोयम्मि महापसिद्ध-जोग्ग-सेट्ठ-पद-पदायगो हु।।149।।

अन्वयार्थ—एसो-यह **णमोयार-मंतो**-णमोकार मंत्र **सय**-सदा **परमेट्ठि-णमोक्कार-णिमित्तं**-परमेष्ठियों के नमस्कार का निमित्त है यह **हु**-निश्चय से **लोयम्मि**-लोक में **महापसिद्ध-जोग्ग-सेट्ठ-पद-पदायगो**-महाप्रसिद्ध, योग्य, श्रेष्ठ पद प्रदायक है।

निर्वाण हेतु

कल्लाणस्स जीवाण, सुगदि-संति-कारणं णमोयारो।
णिव्वाण-हेदू तहा, सव्व-दुक्ख-हारगो मंतो।।150।।

अन्वयार्थ—सव्व-दुक्ख-हारगो-सर्व दु:खहारक **णमोयारो**-णमोकार **मंतो**-मंत्र **जीवाण**-जीवों के **कल्लाणस्स**-कल्याण **सुगदि-संति-कारणं**-सुगति व शांति का कारण है **तहा**-तथा **णिव्वाण-हेदू**-निर्वाण का हेतु है।

कर्म विध्वंसक

कम्म-णासिदुं सक्को, परमेट्ठि-णमोक्कार-जुदो मंतो।
तस्स चिंतणं झाणं, इट्ठ-सिवपद-देदुं सक्को।।151।।

अन्वयार्थ—जो मंतो-मंत्र **कम्म-णासिदुं**-कर्म का नाश करने में **सक्को**-समर्थ है **परमेट्ठि-णमोक्कार-जुदो**-परमेष्ठियों के नमस्कार से युक्त है **तस्स**-उसका **चिंतणं**-चिंतन व **झाणं**-ध्यान **इट्ठ-सिवपद-देदुं**-इष्ट शिव पद को देने में **सक्को**-समर्थ है।

मंत्र सामर्थ्य

अंतरायं णासिदुं, असुहाउं असुह-गोत्तं णामं च।
असादा-वेयणीयं, सुहरूवं करिदुं कम्माणि।।152।।
सव्वावरण-खयेदुं, उवसमिदुं वा परम-णाण-लहिदुं।
मोहणीय-मुवसमिदुं, खयिदुं वा मंतो समत्थो।।153।।

अन्वयार्थ—अंतरायं-अंतराय **असुहाउं**-अशुभ आयु **असुह-गोत्तं-णामं**-अशुभ गोत्र, अशुभ नाम **च**-और **असादा-वेयणीयं**-असाता वेदनीय के **णासिदुं**-नाश के लिए **कम्माणि**-कर्मों को **सुहरूवं**-शुभ रूप **करिदुं**-करने के लिए **सव्वावरण-खयेदुं**-सर्व आवरण के क्षय के लिए **वा**-अथवा **उवसमिदुं**-उपशम के लिए **मोहणीयं**-मोहनीय के **उवसमिदुं**-उपशम **वा**-अथवा **खयिदुं**-क्षय के लिए **परम-णाण-लहिदुं**-परम ज्ञान की प्राप्ति के लिए **मंतो**-मंत्र **समत्थो**-समर्थ है।

शिव दायक मंत्र

सिद्धाणं सिव-सण्णा, भणिदं महादुल्लहं तं पदं वि।
मंतस्स चिंतणेणं, सिवपदं लहंति भव्वा ते।।154।।

अन्वयार्थ—सिद्धाणं-सिद्धों की **सिव-सण्णा**-शिव संज्ञा है **तं**-वह (शिव) **पदं**-पद **वि**-भी **महादुल्लहं**-महादुर्लभ **भणिदं**-कहा गया है **मंतस्स**-मंत्र के **चिंतणेणं**-चिंतन से **ते**-वे **भव्वा**-भव्य जीव **सिवपदं**-शिव पद **लहंति**-प्राप्त करते हैं।

अंतिम मंगलाचरण

उसहाइ-वीरंतं च, अणंतवीरिआइ-सिरिधरंतं हु।
सव्व-पच्चक्ख-णाणी, सयल-संजमी पणमामि हं।।155।।

अन्वयार्थ—हु-निश्चय से **उसहाइ-वीरंतं**-श्री वृषभनाथ से श्री वीर प्रभु तक **अणंतवीरिआइ-सिरिधरंतं**-श्री अनंतवीर्यादि से श्रीधर केवली पर्यंत **सव्व-पच्चक्ख-णाणी**-सर्व प्रत्यक्ष ज्ञानी **च**-और **सयल-संजमी**-सकल संयमियों को **हं**-मैं **पणमामि**-प्रणाम करता हूँ।

तेकालिग-तित्थयरा, केवलि-सूरि-पाढग-साहुणो तह।
विसेसेण अजियणाह-मणंत-सुद्धप्पा पणमामि।।156।।

अन्वयार्थ—तेकालिग-तित्थयरा-त्रैकालिक तीर्थंकर **केवलि-सूरि-पाढग-साहुणो**-केवली, आचार्य, पाठक, साधु **अणंत-सुद्धप्पा**-अनंत शुद्धात्मा **तह**-तथा **विसेसेण**-विशेष रूप से **अजियणाहं**-श्री अजितनाथ प्रभु को **पणमामि**-प्रणाम करता हूँ।

संतिं पायसायरं, जयकित्तिं देसभूसणं सूरिं।
विज्जाणंदाइरियं, पणमामि सया तिभत्तीए।।157।।

अन्वयार्थ—सूरिं-आचार्य **संतिं**-श्री शांतिसागर **पायसायरं**-आचार्य श्री पायसागर **जयकित्तिं**-आचार्य श्री जयकीर्ति **देसभूसणं**-आचार्य श्री देशभूषण **विज्जाणंदाइरियं**-आचार्य श्री विद्यानंद जी को **सया**-सदा **तिभत्तीए**-त्रिभक्ति से **पणमामि**-प्रणाम करता हूँ।

प्रशस्ति

किवादिट्ठीइ गंथो, परंपरागदाइरियाणमिमो दु।
णमोयार-महप्पुरो, मए वसुणंदि-आइरियेण।।158।।

सुहमासे वइसाहे, पुण्णमासीइ सुजोग-णक्खत्ते।
पणवीस-सद-तिचत्ता-वीरणिव्वाणद्धे पुण्णो।।159।।

अन्वयार्थ—परंपरागदाइरियाणं-परंपरागत आचार्यों की **किवादिट्ठीइ**-कृपादृष्टि से **पणवीस-सद-तिचत्ता-वीरणिव्वाणद्धे** 2543 वीर निर्वाण संवत् **सुहमासे वइसाहे**-शुभ वैशाख माह **पुण्णमासीइ**-पूर्णमासी के दिन **सुजोग-णक्खत्ते**-शुभ योग व नक्षत्र में **इमो**-यह **णमोयार-महप्पुरो** णमोकार माहात्म्य नामक **गंथो**-ग्रंथ **मए** मेरे **वसुणंदि-आइरियेण** आचार्य वसुनंदि के द्वारा **पुण्णो** पूर्ण हुआ।